

Test Code 02171124



AAKALAN BPSC Prelims Test-2024 (Subject Code: 01)

ANSWER KEY

- | | | | | | |
|---------|---------|---------|----------|----------|----------|
| 1. (b) | 26. (b) | 51. (a) | 76. (b) | 101. (a) | 126. (b) |
| 2. (a) | 27. (d) | 52. (a) | 77. (c) | 102. (a) | 127. (a) |
| 3. (c) | 28. (a) | 53. (d) | 78. (c) | 103. (d) | 128. (b) |
| 4. (b) | 29. (a) | 54. (b) | 79. (a) | 104. (a) | 129. (a) |
| 5. (a) | 30. (a) | 55. (a) | 80. (c) | 105. (a) | 130. (a) |
| 6. (b) | 31. (a) | 56. (a) | 81. (b) | 106. (c) | 131. (a) |
| 7. (a) | 32. (c) | 57. (a) | 82. (a) | 107. (b) | 132. (a) |
| 8. (b) | 33. (b) | 58. (b) | 83. (b) | 108. (a) | 133. (a) |
| 9. (b) | 34. (b) | 59. (c) | 84. (a) | 109. (a) | 134. (d) |
| 10. (d) | 35. (a) | 60. (c) | 85. (a) | 110. (d) | 135. (b) |
| 11. (c) | 36. (b) | 61. (c) | 86. (b) | 111. (b) | 136. (b) |
| 12. (c) | 37. (c) | 62. (b) | 87. (a) | 112. (a) | 137. (c) |
| 13. (c) | 38. (a) | 63. (a) | 88. (c) | 113. (a) | 138. (c) |
| 14. (a) | 39. (b) | 64. (b) | 89. (b) | 114. (a) | 139. (d) |
| 15. (b) | 40. (c) | 65. (d) | 90. (c) | 115. (b) | 140. (c) |
| 16. (d) | 41. (c) | 66. (c) | 91. (b) | 116. (c) | 141. (d) |
| 17. (a) | 42. (a) | 67. (d) | 92. (c) | 117. (c) | 142. (b) |
| 18. (a) | 43. (d) | 68. (b) | 93. (c) | 118. (c) | 143. (b) |
| 19. (a) | 44. (d) | 69. (d) | 94. (c) | 119. (d) | 144. (b) |
| 20. (d) | 45. (a) | 70. (c) | 95. (a) | 120. (d) | 145. (b) |
| 21. (a) | 46. (b) | 71. (c) | 96. (a) | 121. (b) | 146. (c) |
| 22. (c) | 47. (a) | 72. (c) | 97. (b) | 122. (c) | 147. (b) |
| 23. (a) | 48. (c) | 73. (b) | 98. (b) | 123. (d) | 148. (b) |
| 24. (a) | 49. (c) | 74. (a) | 99. (c) | 124. (a) | 149. (a) |
| 25. (b) | 50. (a) | 75. (d) | 100. (c) | 125. (d) | 150. (c) |



1. (b)

संगम साहित्य, प्राचीन तमिल साहित्यिक परंपरा, मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित है: अकम और पुरम। ये वर्गीकरण कविताओं की विषयवस्तु पर आधारित हैं।

- **अकम:** यह मानव जीवन के आंतरिक पहलुओं पर केंद्रित कविताओं को संदर्भित करता है, विशेष रूप से प्रेम, व्यक्तिगत भावनाओं और अंतरंग संबंधों के विषयों पर। "अकम" शब्द का अर्थ है "भीतरी" या "आंतरिक दुनिया", जो मानव जीवन के व्यक्तिगत और भावनात्मक पहलुओं का प्रतीक है। अकम कविताएं रोमांटिक संबंधों के विभिन्न चरणों और अनुभवों का अन्वेषण करती हैं, जैसे प्रेम, विरह, मिलन और लालसा। ये कविताएं प्राकृतिक चित्रण और रूपकों का उपयोग करके भावनाओं को सूक्ष्मता से व्यक्त करती हैं, जो संगम साहित्य की अनूठी साहित्यिक परंपराओं का पालन करती हैं।
- **पुरम:** इसके विपरीत, पुरम कविताएं जीवन के "बाहरी" या सार्वजनिक पहलुओं से संबंधित हैं, जैसे युद्ध, वीरता, सम्मान, राजत्व और सामुदायिक जीवन। यह श्रेणी सामाजिक और वीरतापूर्ण विषयों पर केंद्रित है, विशेष रूप से योद्धाओं और राजाओं की बाहरी उपलब्धियों और जिम्मेदारियों का उत्सव मनाती है।
- **तोलकाप्पियम:** यह एक प्राचीन तमिल व्याकरण ग्रंथ है, जिसे तमिल भाषाविज्ञान और काव्यशास्त्र पर सबसे प्रारंभिक कार्यों में से एक माना जाता है, लेकिन यह विशेष रूप से अकम या पुरम साहित्य के रूप में वर्गीकृत नहीं है।
- **मणिमेकलाई:** यह एक तमिल महाकाव्य है और उत्तर-संगम साहित्य का हिस्सा है। यह बौद्ध धर्म और नैतिक विषयों के इर्द-गिर्द घूमता है, जो संगम शैली के अकम और पुरम वर्गीकरण से संबंधित नहीं है।

2. (a)

- **अशोक के अभिलेख (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व):** ये सबसे प्रारंभिक ज्ञात शिलालेखों में से हैं, जो मौर्य सम्राट अशोक द्वारा जारी किए गए थे। ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों में लिखे गए, ये धर्म (नैतिक आचरण) के सिद्धांतों का प्रचार करते हैं और बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित करते हैं। अशोक के अभिलेख पूरे उपमहाद्वीप में पाए जाते हैं, जो उनके शासन और मूल्यों के व्यापक प्रभाव को दर्शाते हैं।
- **हाथीगुम्फा शिलालेख (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व):** ओडिशा में स्थित यह शिलालेख महामेघवाहन वंश के राजा खारवेल से संबंधित है। इसमें उनके सैन्य अभियानों, सार्वजनिक कल्याण के कार्यों और धार्मिक गतिविधियों का वर्णन है, जो पूर्वी भारत की राजनीति और समाज की एक झलक प्रदान करता है।
- **रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख (150 ईस्वी):** यह प्रारंभिक संस्कृत शिलालेख शक शासक रुद्रदामन प्रथम द्वारा स्थापित किया गया था। इसमें सुदर्शन झील की मरम्मत का विवरण है, जो जल प्रबंधन और बुनियादी ढांचे के महत्त्व को दर्शाता है। यह शिलालेख पश्चिमी भारत में शक-क्षत्रप प्रभाव को दर्शाता है।
- **पुलकेशिन II का ऐहोल शिलालेख (634 ईस्वी):** चालुक्य शासक पुलकेशिन II द्वारा निर्मित, यह शिलालेख उनके विजयों का वर्णन करता है, जिसमें विभिन्न शासकों, विशेष रूप से पल्लवों पर उनकी जीत शामिल है। यह दक्षिण भारत में चालुक्य काल के दौरान शक्ति और राजनीतिक संगठन को दर्शाता है।

3. (c)

- **कार्ले गुफाएं:** महाराष्ट्र में स्थित, कार्ले गुफाएं प्रारंभिक ईस्वी शताब्दियों की बौद्ध शैलिकृत वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यहां एक बड़ा चैत्य हॉल और कई विहार हैं, जो प्रारंभिक बौद्ध मठों की विशेषता हैं। कार्ले गुफाएं हीनयान से महायान बौद्ध धर्म में वास्तु और आध्यात्मिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहां महायान प्रतीकात्मकता का प्रभाव दिखने लगता है। इसलिए यह सही उत्तर है।

- **बाघ गुफाएं:** मध्य प्रदेश में स्थित, ये गुफाएं अपनी चित्रकला और वास्तुकला संरचनाओं के लिए जानी जाती हैं। हालांकि, वे मुख्य रूप से महायान बौद्ध कला को प्रदर्शित करती हैं और हीनयान से महायान में परिवर्तन के साथ विशेष संबंध नहीं रखती।
- **उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएं:** ओडिशा में स्थित, ये गुफाएं अपने जैन अभिलेखों और मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- **एलिफेंटा गुफाएं:** मुंबई के पास स्थित, ये गुफाएं मुख्य रूप से हिंदू देवता शिव को समर्पित हैं।

4. (b)

चोल वंश – चोल वंश अपनी भव्य मंदिर वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें **तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर** एक प्रतिष्ठित उदाहरण है। यह मंदिर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है और अपने विशाल आकार, ऊँचे विमान (मंदिर टॉवर), और जटिल मूर्तियों के लिए जाना जाता है।

- **विजयनगर साम्राज्य** – विजयनगर साम्राज्य अपनी अद्वितीय वास्तुकला शैली के लिए जाना जाता है, जिसमें द्रविड़ और स्थानीय प्रभावों का संगम है, विशेष रूप से हम्पी के मंदिरों में। इसकी प्रसिद्ध वास्तुकला उपलब्धियों में **विट्ठल मंदिर** है, जो अपने संगीतमय स्तंभों और पत्थर के रथ के लिए प्रसिद्ध है।
- **पल्लव वंश** – पल्लव दक्षिण भारत में चट्टानों को काटकर बनाए गए वास्तुशिल्प के अग्रणी माने जाते हैं। उन्होंने महाबलीपुरम (ममल्लपुरम) में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें **शोर मंदिर** शामिल है, जो दक्षिण भारत के सबसे प्रारंभिक संरचनात्मक मंदिरों में से एक है।
- **पांड्य वंश** – पांड्य वंश द्रविड़ शैली और जटिल मंदिर संरचनाओं के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। **मदुरै का मीनाक्षी मंदिर** उनकी सबसे उल्लेखनीय स्थापत्य उपलब्धियों में से एक है, जो अपने विशाल गोपुरम (प्रवेश द्वार) और विस्तृत मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है।

5. (a)

- **कथन 1:** सही है। *भरतनाट्यम* तमिलनाडु के मंदिरों में एक अनुष्ठानिक और भक्तिमय नृत्य के रूप में विकसित हुआ, जिसे देवदासियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता था।
- **कथन 2:** गलत है। *कथक* उत्तर भारत में विकसित हुआ और कहानी कहने वाले नृत्य के रूप में शुरू हुआ, जो बाद में मुगल दरबारों में विकसित हुआ। यह मुख्य रूप से राजस्थान के मंदिर अनुष्ठानों से संबंधित नहीं था, बल्कि उत्तर प्रदेश से संबंधित है।
- **कथन 3:** सही है। *नाट्यशास्त्र*, जिसे ऋषि भरत ने लिखा था, प्रदर्शन कलाओं पर सबसे प्रारंभिक और व्यापक ग्रंथ माना जाता है, जिसमें नृत्य, नाटक और संगीत शामिल हैं।
- **कथन 4:** सही है। *मणिपुरी नृत्य* विशेष रूप से मणिपुर राज्य में लोकप्रिय है और रासलीला परंपरा से प्रेरित है, जो राधा और कृष्ण के प्रेम और भक्ति का चित्रण करती है।

6. (b)

- कठपुतली भारतीय पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं का एक अभिन्न हिस्सा रही है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों ने कठपुतली के अनूठे रूप विकसित किए हैं। भारतीय कठपुतली को उपयोग की गई तकनीक के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे छाया कठपुतली, धागे की कठपुतली, छड़ी की कठपुतली, और हाथ की कठपुतली।
- **तोलु बोंमलाटा** आंध्र प्रदेश का एक पारंपरिक छाया कठपुतली रूप है। तेलुगु में "तोलु" का अर्थ है चमड़ा, और "बोंमलाटा" का अर्थ है कठपुतली का नृत्य, जो इस रूप में चमड़े की कठपुतलियों के उपयोग को इंगित करता है।
- **कठपुतली** राजस्थान की धागे की कठपुतली का एक रूप है। यह छाया तकनीक का उपयोग नहीं करता, बल्कि यह धागों से जुड़ी कठपुतलियों का उपयोग करके कहानियाँ प्रस्तुत करता है, जो अक्सर राजपूत इतिहास और लोक कथाओं पर आधारित होती हैं।
- **गोम्बेयट्टा** कर्नाटक का कठपुतली रूप है और यह मुख्य रूप से धागे और छड़ी की कठपुतली से जुड़ा है। "गोम्बे" का अर्थ कन्नड़ में गुड़िया है। यह रूप छाया कठपुतलियों का उपयोग नहीं करता।
- **बोंमलट्टम** तमिलनाडु में प्रचलित एक कठपुतली रूप है, जो धागे और छड़ी की कठपुतली का अनोखा संयोजन है। कठपुतलियों को धागे और छड़ी दोनों का उपयोग करके नियंत्रित किया जाता है, जिससे विस्तृत गति की अनुमति मिलती है। यह रूप छाया कठपुतली से संबंधित नहीं है।

7. (a)

- **कथन 1:** मेगालिथिक संरचनाओं का मुख्य रूप से अंतिम संस्कार के लिए उपयोग किया गया था – यह कथन सही है। मेगालिथिक संरचनाएं, जैसे डोलमेंस, पत्थर की वृत्ताकार रचनाएं और कर्न, मुख्य रूप से अंतिम संस्कार स्थलों के रूप में उपयोग की जाती थीं और इन्हें अक्सर अंतिम संस्कार प्रथाओं से जोड़ा जाता है।
- **कथन 2:** ऐसा माना जाता है कि मेगालिथिक लोगों ने भारत में लोहे के औजार और हथियारों को पेश किया – यह कथन भी सही है। मेगालिथिक संस्कृति लोहे के औजारों और हथियारों के उपयोग के लिए जानी जाती है, जो भारत के कई हिस्सों में लौह युग की शुरुआत का प्रतीक है।
- **कथन 3:** नागार्जुनकोंडा स्थल को महत्वपूर्ण मेगालिथिक अवशेषों के लिए जाना जाता है – यह कथन गलत है। नागार्जुनकोंडा, आंध्र प्रदेश में स्थित है, जो मुख्य रूप से अपने बौद्ध अवशेषों और कलाकृतियों के लिए जाना जाता है, न कि मेगालिथिक संरचनाओं के लिए।

8. (b)

- **सातवाहन वंश**, जो प्राचीन काल में मध्य और दक्षिण भारत में अपने विस्तृत शासन के लिए जाना जाता है, अपनी क्षेत्रीय संस्कृति, प्रशासन और व्यापार में योगदान के लिए उल्लेखनीय है। उनका शासन पहली शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक फैला था, जिसमें गौतमीपुत्र सातकर्णी जैसे प्रसिद्ध शासक शामिल थे।
- **सातवाहन** प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि से अंकित सिक्कों का उपयोग करने वाले अग्रदूत थे। इस प्रथा ने क्षेत्रीय भाषा और सांस्कृतिक पहचान को बढ़ावा देने में मदद की। सिक्कों में शासकों के नाम और विभिन्न प्रतीक अंकित होते थे, जो उनके अधिकार के चिह्न के रूप में कार्य करते थे।
- **मातृसत्तात्मक उत्तराधिकार प्रणाली** का पालन नहीं किया गया था। सातवाहन शासकों ने अक्सर अपने शिलालेखों में अपनी मां के वंश का उल्लेख किया, जैसे कि गौतमीपुत्र का अर्थ "गौतमी का पुत्र" है। यह मातृवंशीय वंश का सम्मान प्रदर्शित करता है, लेकिन यह उत्तराधिकार में मातृरेखा द्वारा प्राप्ति को इंगित नहीं करता।
- **गौतमीपुत्र सातकर्णी** सातवाहन वंश के पुनरुद्धार के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने विशेष रूप से नहपाण नामक शक (पश्चिमी क्षत्रप) को हराकर सातवाहन वंश की शक्ति को पश्चिमी और मध्य भारत में पुनर्स्थापित किया। उनकी जीत ने सातवाहन क्षेत्रीय प्रभुत्व में पुनरुत्थान का प्रतीक प्रस्तुत किया।
- **सातवाहन वंश** मुख्य रूप से ब्राह्मणवाद (वैदिक परंपराओं) का समर्थन करता था और बौद्ध धर्म के भी संरक्षक थे, जैसा कि अमरावती और साँची जैसे स्थलों पर बौद्ध स्तूपों के प्रति उनके समर्थन से सिद्ध होता है। कोई ऐतिहासिक साक्ष्य यह संकेत नहीं देता कि वे जैन धर्म के अनुयायी थे, और न ही कट्टर अनुयायी थे।

9. (b)

- **भरुच (बरिगाजा)** – गुजरात में स्थित, भरुच एक महत्वपूर्ण प्राचीन बंदरगाह था जो अपने रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार संबंधों के लिए जाना जाता था।
- **सोपारा** – महाराष्ट्र में स्थित सोपारा पश्चिमी तट पर एक प्रमुख बंदरगाह था, जिसने भारत के भीतर और विदेशों के साथ व्यापार मार्गों में योगदान दिया।
- **ताम्रलिप्त** – बंगाल (वर्तमान पश्चिम बंगाल) में स्थित, ताम्रलिप्त एक प्रमुख पूर्वी बंदरगाह था जो भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ता था।
- **अरिकमेडु** – पांडिचेरी (तमिलनाडु) के पास स्थित, अरिकमेडु एक प्राचीन बंदरगाह था जो अपने मोतियों और मिट्टी के बर्तनों में रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार के लिए जाना जाता था।

10. (d)

- **विजयनगर साम्राज्य (1336–1646 ईस्वी)** दक्षिण भारत के प्रमुख साम्राज्यों में से एक था, जिसमें एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक ढांचा था। इस ढांचे में एक कुशल राजस्व प्रणाली और एक पदानुक्रमित सैन्य ढांचा शामिल था। अमर-नायक प्रणाली इस साम्राज्य की शासन प्रणाली की एक अनूठी विशेषता थी, जिसे विशाल क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखते हुए शक्ति को विकेंद्रीकृत करने के लिए डिजाइन किया गया था।
- **प्रशासनिक इकाइयाँ – नाडु, स्थला और ग्राम:**
 - विजयनगर साम्राज्य को कुशल प्रशासन के लिए कई प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित किया गया था:
 - **नाडु:** एक बड़ी प्रशासनिक इकाई, जो जिले के समान है।

■ **स्थला:** नाडु के भीतर एक उप-इकाई, जो उप-जिले या ब्लॉक के समान है।

■ **ग्राम:** गाँवों को संदर्भित करता है।

- यह विभाजन विभिन्न स्तरों पर प्रभावी प्रशासन को सक्षम बनाता था, जिससे साम्राज्य को दूर के क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखने में सहायता मिलती थी।
- **अमर-नायक** सैन्य अधिकारी थे जिन्हें राजा द्वारा भूमि (जिसे अमर कहा जाता था) प्रदान की जाती थी। उन्हें अपने निर्धारित भूमि से राजस्व एकत्र करने और एक सैन्य बल बनाए रखने का उत्तरदायित्व दिया गया था। वे केंद्रीय प्रशासन और स्थानीय क्षेत्रों के बीच मध्यस्थों के रूप में कार्य करते थे।
- विजयनगर साम्राज्य अपनी धार्मिक सहिष्णुता के लिए जाना जाता था। हालाँकि शासक मुख्य रूप से हिंदू धर्म के अनुयायी थे, उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया और जैन और मुस्लिम समुदायों सहित कई धार्मिक समुदायों का समर्थन किया। इस नीति ने सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा दिया और साम्राज्य में सामाजिक समरसता बनाए रखने में मदद की।
- **अमर-नायकों की स्थिति वंशानुगत नहीं थी।** उन्हें राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था, और उनकी शक्ति पीढ़ियों के माध्यम से पारित नहीं होनी थी। सम्राट को किसी अमर-नायक की भूमि या पद को पुनः सौंपने या रद्द करने का अधिकार था, जो इन सैन्य अधिकारियों पर नियंत्रण बनाए रखने और वंशानुगत सामंतों के उदय को रोकने का साधन था।

11. (c)

मध्यकालीन भारत में कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना की गई, जो उस समय की सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हैं। इनमें से कई कृतियों का लेखन दरबारी इतिहासकारों, विद्वानों और शासकों द्वारा किया गया।

- मध्यकालीन भारत में कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना हुई, जो उस समय की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इनमें से कई कार्य दरबारी इतिहासकारों, विद्वानों और शासकों द्वारा लिखे गए, जो विभिन्न सुल्तानों और सम्राटों के शासन और उपलब्धियों का दस्तावेजीकरण करते हैं।
- **तबकात-ए-नासिरी** - मिनहाज-उस-सिराज द्वारा:
 - **तबकात-ए-नासिरी** मिनहाज-उस-सिराज द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह ग्रंथ भारत में प्रारंभिक इस्लामी शासन का विस्तृत विवरण प्रदान करता है और इसमें दिल्ली सल्तनत के शासनकाल को नासिरुद्दीन महमूद के समय तक शामिल किया गया है।
- **फुतुहत-ए-फिरोज शाही** - फिरोज शाह तुगलक द्वारा:
 - **फुतुहत-ए-फिरोज शाही** फिरोज शाह तुगलक द्वारा स्वयं लिखित एक आत्मकथात्मक ग्रंथ है। इसमें उन्होंने अपने कार्यों, उपलब्धियों, सार्वजनिक कार्यों और धार्मिक नीतियों का वर्णन किया है। यह रचना शासक की आत्मधारणा और उसकी उपलब्धियों को दर्शाती है।
- **तारीख-ए-फिरोजशाही** - जियाउद्दीन बरनी द्वारा:
 - **तारीख-ए-फिरोजशाही** जियाउद्दीन बरनी द्वारा लिखित है, जो दिल्ली सल्तनत में एक इतिहासकार और दरबारी विद्वान थे। यह ग्रंथ तुगलक वंश के बारे में जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और इसमें मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज शाह तुगलक सहित शासकों का आलोचनात्मक विवरण है।
- **तारीख-ए-मुबारकशाही** - याह्या बिन सिरहिंदी द्वारा:
 - **तारीख-ए-मुबारकशाही** याह्या बिन सिरहिंदी द्वारा लिखित है और इसमें सुल्तान मुबारक शाह के शासनकाल तक दिल्ली सल्तनत का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रंथ उस समय की राजनीतिक और प्रशासनिक स्थितियों के विस्तृत चित्रण के लिए उल्लेखनीय है।

12. (c)

- **राजाओं के दैवीय अधिकार का सिद्धांत** यह मानता है कि राजा का अधिकार एक दैवीय स्रोत से प्राप्त होता है और वह केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी होता है, न कि किसी सांसारिक प्राधिकरण के प्रति। यह सिद्धांत विश्व के कई हिस्सों में प्रभावशाली था और शासकों के लिए अपने अधिकार को दैवीय रूप से स्थापित दिखाने का एक साधन था।

दिल्ली सल्तनत में, इस अवधारणा को स्पष्ट रूप से शासक के अधिकार को कुलीनों और प्रजा पर मजबूत करने के लिए अपनाया गया।

- **गयासुद्दीन बलबन** दिल्ली सल्तनत के पहले सुल्तान थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से **दैवीय अधिकार का सिद्धांत** लागू किया। उन्होंने दावा किया कि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है, जो किसी के भी प्रश्न या चुनौती से परे है, जिसमें कुलीन वर्ग भी शामिल है। बलबन ने इस दैवीय स्थिति को अपनी सत्ता को सुदृढ़ करने और अपने दरबार और प्रशासन पर कड़ा नियंत्रण बनाए रखने के लिए महत्त्व दिया।
- उन्होंने **जिल-ए-इलाही** (ईश्वर की छाया) की अवधारणा पेश की, जो यह दर्शाता था कि उनका शासन एक दैवीय आदेश से है। इस सिद्धांत को सख्ती से लागू करने से उन्होंने कुलीनों की शक्ति को नियंत्रित किया और सल्तनत की केंद्रीकृत शक्ति को मजबूत किया।

13. (c)

- मध्यकालीन काल में विश्व के विभिन्न हिस्सों से कई प्रमुख यात्रियों ने भारत की यात्रा की। उनकी टिप्पणियाँ मध्यकालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिस्थितियों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करती हैं। प्रत्येक यात्री एक विशिष्ट पृष्ठभूमि से आया था और अपने अनुभवों को अपने-अपने कार्यों में दर्ज किया।
- **इब्र बतूता – मोरक्को:**
 - इब्र बतूता मोरक्को से एक प्रसिद्ध यात्री और विद्वान थे। उन्होंने मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान भारत की यात्रा की और सुल्तान के दरबार में क़ाज़ी (न्यायाधीश) के रूप में सेवा की। उनकी यात्रा को उनके यात्रा वृत्तांत, **रिहला** में विस्तृत रूप से दर्ज किया गया है।
- **मार्को पोलो – इटली:**
 - मार्को पोलो इटली के वेनिस से एक यात्री थे। हालाँकि उन्होंने मुख्य रूप से एशिया की यात्रा की, लेकिन उन्हें भारत के पश्चिमी तट पर यात्रा करने के लिए भी जाना जाता है। भारतीय समाज और व्यापार के उनके वर्णनों ने यूरोपीय पाठकों को भारत के बारे में परिचित कराया।
- **अल-बरूनी – फारस:**
 - अल-बरूनी फारस (वर्तमान ईरान) के एक विद्वान थे। उन्होंने महमूद गजनवी के समय भारत की यात्रा की और भारतीय संस्कृति, विज्ञान, और धर्म का विस्तृत अध्ययन किया। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक, **किताब अल-हिंद**, भारतीय समाज का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है।
- **दुआर्ते बारबोसा – पुर्तगाल:**
 - दुआर्ते बारबोसा एक पुर्तगाली यात्री और लेखक थे। उन्होंने 16वीं सदी की शुरुआत में भारत की यात्रा की और मालाबार तट तथा विजयनगर साम्राज्य का विस्तृत वर्णन किया। उनके लेखन में दक्षिण भारत के व्यापार और सामाजिक जीवन की जानकारी मिलती है।

14. (a)

मुगल काल के दौरान विभिन्न क्षेत्रों के प्रबंधन के लिए कई गवर्नरों की नियुक्ति की गई और उन्हें प्रशासनिक सुधारों से लेकर सैन्य अभियानों तक विभिन्न कार्यों की जिम्मेदारी दी गई। इन गवर्नरों के योगदान विशाल साम्राज्य पर नियंत्रण बनाए रखने में महत्वपूर्ण थे।

- **मलिक अंबर – दक्कन में प्रशासन का पुनर्गठन:**
 - मलिक अंबर दक्कन का एक प्रभावशाली राजनीतिज्ञ और सैन्य नेता था। अपनी प्रशासनिक प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध, उन्होंने दक्कन, विशेष रूप से अहमदनगर सल्तनत में, प्रशासन का पुनर्गठन किया और राजस्व सुधार लागू किए। उनकी नवाचारपूर्ण प्रशासनिक विधियों ने इस क्षेत्र में मुगलों के लिए एक बड़ी चुनौती खड़ी कर दी।
- **राजा मान सिंह – अकबर के शासन में बंगाल का प्रबंधन:**
 - राजा मान सिंह, सम्राट अकबर के एक विश्वसनीय जनरल, को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया गया था। उन्होंने इस क्षेत्र की स्थिरता सुनिश्चित करने, प्रशासन की देखरेख करने और मुगल प्रभाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके शासन ने बंगाल को मुगल नियंत्रण में सुरक्षित किया।
- **आसफ खान – गुजरात में मुद्रा सुधार विकसित किए:**

- आसफ खान ने अकबर के शासन में गुजरात के गवर्नर के रूप में सेवा की और क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए मुद्रा सुधार लागू किए। इन सुधारों ने गुजरात की अर्थव्यवस्था को बड़े मुगल प्रणाली में एकीकृत करने में मदद की, जिससे राजस्व का एक स्थिर प्रवाह सुनिश्चित हुआ।
- **मीर जुमला - असम में सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया:**
 - मीर जुमला, जो औरंगज़ेब के अधीन एक प्रमुख दरबारी और जनरल थे, ने असम में सफल सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया। उनके अभियानों ने पूर्वोत्तर भारत में मुगल प्रभाव का विस्तार किया, हालांकि यह क्षेत्र नियंत्रण में लाने के लिए चुनौतीपूर्ण बना रहा।

15. (b)

अकबर ने सैन्य विजय और कूटनीतिक रणनीतियों के संयोजन के माध्यम से मुगल साम्राज्य का विस्तार किया। उनके शासनकाल के अंत तक, मुगल साम्राज्य ने भारत के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को शामिल कर लिया था।

- **गुजरात** - अकबर ने 1572 में गुजरात पर विजय प्राप्त की, जो बंदरगाहों और व्यापार मार्गों के लिए महत्वपूर्ण था।
- **कश्मीर** - 1586 में अकबर ने कश्मीर पर कब्जा कर लिया। यह खूबसूरत और सामरिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र मुगलों की उत्तरी सीमा को विस्तारित करता था।
- **मालवा** - अकबर के शासनकाल के प्रारंभ में 1561 में मुगलों के अधीन आया। इस क्षेत्र को शामिल करने से अकबर ने भारत के मध्य भागों को सुरक्षित किया।
- **हैदराबाद** - दक्कन में स्थित था, जिसे अकबर ने सीधे नियंत्रित नहीं किया। यह क्षेत्र कुतुब शाही वंश के नियंत्रण में था, जो मुगल प्रभुत्व को मान्यता देते हुए भी अर्ध-स्वतंत्र था।
- इसलिए, हैदराबाद अकबर के सीधे नियंत्रण में नहीं था।

16. (d)

रौलेट एक्ट, जिसे "एनार्किकल एंड रेवोल्यूशनरी क्राइम्स एक्ट" के नाम से भी जाना जाता है, 1919 में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने के लिए लागू किया गया था। इसने औपनिवेशिक सरकार को व्यापक शक्तियों का प्रयोग करने की अनुमति दी, जिसमें बिना मुकदमे के हिरासत में लेने का अधिकार शामिल था, जिसके परिणामस्वरूप देश भर में व्यापक विरोध और असंतोष हुआ।

- **रौलेट एक्ट** ने सरकार को बिना मुकदमे के व्यक्तियों को दो साल तक कैद करने का अधिकार दिया, यदि उन पर क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने का संदेह था। यह प्रावधान अधिनियम के सबसे विवादास्पद भागों में से एक था, क्योंकि इसने नागरिक स्वतंत्रताओं को निलंबित कर दिया और भारतीय जनता द्वारा इसे दमनकारी माना गया।
- यह अधिनियम **सर सिडनी रौलेट** की अध्यक्षता वाली **राजद्रोह समिति** की सिफारिशों पर आधारित था। इस समिति का गठन भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों की जांच और उन्हें रोकने के लिए किया गया था, और इसकी सिफारिशों ने रौलेट एक्ट के मसौदे को तैयार करने में योगदान दिया।
- रौलेट एक्ट को आधिकारिक तौर पर "**एनार्किकल एंड रेवोल्यूशनरी क्राइम्स एक्ट**" के नाम से जाना जाता था। यह आधिकारिक नाम भारत में ब्रिटिश शासन के लिए खतरा माने जाने वाली क्रांतिकारी गतिविधियों को नियंत्रित करने के उसके उद्देश्य को प्रतिबिंबित करता है।
- **हंटर आयोग** रौलेट एक्ट की जांच के लिए गठित नहीं किया गया था। इसके बजाय, यह **जलियांवाला बाग हत्याकांड** की जांच के लिए स्थापित किया गया था, जो 13 अप्रैल, 1919 को रौलेट एक्ट के खिलाफ व्यापक विरोध के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में हुआ था। इस हत्याकांड ने भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन को और तीव्र किया, लेकिन यह अधिनियम के कार्यान्वयन की समीक्षा नहीं था।

17. (a)

होम रूल आंदोलन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक द्वारा भारत में स्व-शासन की मांग के लिए शुरू किया गया था। एनी बेसेंट की **होम रूल लीग** ने विशेष रूप से शिक्षित मध्यम वर्ग में जनता की राय संगठित करने और राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- **एनी बेसेंट ने 1916 में होम रूल लीग की स्थापना** भारत में स्व-शासन प्राप्त करने के उद्देश्य से की। यह आंदोलन आयरिश होम रूल आंदोलन से प्रेरित था और ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर अधिक स्वायत्तता की मांग करता था। लीग ने अपनी बात सार्वजनिक बैठकों, पर्चों, और समाचार पत्रों के माध्यम से फैलाई।

- लीग ने मुख्य रूप से छात्रों और मध्यम वर्ग के पेशेवरों को संगठित करने पर ध्यान केंद्रित किया, जो ब्रिटिश शासन से असंतुष्ट थे। एनी बेसेंट के प्रयासों ने इस जनसमूह को विशेष रूप से प्रभावित किया, जिसने राष्ट्रवादी विचारों को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **प्रथम विश्व युद्ध के बाद** होम रूल लीग का औपचारिक रूप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विलय नहीं हुआ। इसके बजाय, कांग्रेस ने होम रूल लीग की कुछ मांगों और नेताओं को अपने मंच में शामिल किया, लेकिन लीग ने कुछ समय के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करना जारी रखा। अंततः, जैसे-जैसे अन्य राष्ट्रवादी आंदोलनों ने जोर पकड़ा, इसका प्रभाव घटता गया।

18. (a)

- 1930 के दशक की शुरुआत भारत में ब्रिटिश सरकार और भारतीय नेताओं के बीच स्व-शासन की मांग को लेकर तीव्र बातचीत और राजनीतिक गतिविधियों का दौर था। ये घटनाएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मील के पथर हैं और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख विकासों को दर्शाती हैं।
- **गाँधी-इरविन समझौता (1931):**
 - गाँधी-इरविन समझौता 5 मार्च, 1931 को महात्मा गाँधी और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच हुआ था। इस समझौते के अनुसार, ब्रिटिश सरकार ने राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर सहमति जताई और गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को निलंबित कर द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर सहमति दी।
- **कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931):**
 - गाँधी-इरविन समझौते के बाद, 26-31 मार्च, 1931 को कराची में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस सत्र में कांग्रेस ने मौलिक अधिकारों और आर्थिक नीति पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए, जिससे भविष्य की भारतीय आकांक्षाओं की नींव पड़ी।
- **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931):**
 - दूसरा गोलमेज सम्मेलन सितंबर से दिसंबर 1931 तक लंदन में आयोजित किया गया। गाँधीजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में इसमें शामिल हुए, लेकिन ब्रिटिश सरकार द्वारा कोई महत्वपूर्ण रियायतें न मिलने से सम्मेलन निराशाजनक रूप में समाप्त हुआ।
- **पूना समझौता (1932):**
 - पूना समझौता 24 सितंबर, 1932 को डॉ. भीमराव अंबेडकर और महात्मा गाँधी के बीच हुआ। इस समझौते का उद्देश्य अवर वर्गों के लिए विधायी सभाओं में पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना था, जिससे ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तावित पृथक निर्वाचक मंडलों की आवश्यकता को टाला जा सके।

19. (a)

- **भारतीय परिषद् अधिनियम 1861** ब्रिटिश शासन द्वारा पेश किया गया एक महत्वपूर्ण विधायी सुधार था, जिसने भारतीयों की शासन में भूमिका का विस्तार किया, यद्यपि सीमित क्षमता में। यह ब्रिटिश भारत में एक विधायी ढांचे की शुरुआत का प्रतीक था, जो अंततः अधिक समावेशी विधायी सुधारों में विकसित हुआ।
- **विधायी परिषदों की स्थापना:** भारतीय परिषद् अधिनियम 1861 ने केंद्रीय और प्रांतीय स्तर पर विधायी परिषदों की अवधारणा प्रस्तुत की। इसने शासन में विस्तारित भूमिका की अनुमति दी और परिषदों को सीमित शक्तियों के साथ विधेयकों पर चर्चा करने और प्रस्ताव रखने का अधिकार दिया।
- **भारतीयों को गैर-आधिकारिक सदस्यों के रूप में शामिल करना:** पहली बार, इस अधिनियम ने विधायी परिषदों में भारतीयों को गैर-आधिकारिक सदस्यों के रूप में शामिल करने की अनुमति दी। यह ब्रिटिश शासन द्वारा भारतीयों को शासन में शामिल करने का प्रयास था, भले ही यह केवल नाममात्र का ही क्यों न हो। अगले कुछ वर्षों में कुछ प्रमुख भारतीयों को परिषदों में नामांकित किया गया।
- **भारतीय मामलों का नियंत्रण का हस्तांतरण:** इस अधिनियम ने भारतीय मामलों का नियंत्रण ब्रिटिश क्राउन से भारतीय विधायी परिषद् को हस्तांतरित नहीं किया। भारतीय शासन पर अंतिम अधिकार ब्रिटिश क्राउन के पास बना रहा, और वायसराय एवं उनकी परिषद् क्राउन के निर्देशन में कार्यरत थे। विधायी परिषदों की शक्तियाँ सीमित थीं और वे मुख्य रूप से एक सलाहकारी निकाय के रूप में कार्य करती थीं।

20. (d)

- **रैयतवाड़ी बंदोबस्त** भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा लागू की गई भूमि राजस्व प्रणालियों में से एक थी। इसे प्रारंभ में थॉमस मुनरो द्वारा विकसित किया गया था, और इसका उद्देश्य ज़मींदारी प्रणाली का विकल्प प्रदान करना और व्यक्तिगत किसानों या "रैयतों" के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से राजस्व संग्रह को सुव्यवस्थित करना था।
- **रैयतवाड़ी प्रणाली** मद्रास, बंबई और असम प्रेसीडेंसी में शुरू की गई थी। इसे मुनरो और रीड द्वारा लागू किया गया था। इस प्रणाली को उन क्षेत्रों में अपनाया गया, जहाँ ब्रिटिश प्रशासन को व्यक्तिगत किसानों से सीधे राजस्व एकत्र करना अधिक प्रभावी लगा, बजाय इसके कि वे इसे बिचौलियों (जमींदारों) के माध्यम से एकत्र करें।
- रैयतवाड़ी बंदोबस्त के तहत, सरकार सीधे किसानों से राजस्व एकत्र करती थी, जिन्हें "रैयत" कहा जाता था। इस सीधे संपर्क के माध्यम से जमींदारों को दरकिनार किया गया, जिसका उद्देश्य राजस्व प्रणाली को अधिक कुशल बनाना और बिचौलियों द्वारा होने वाले भ्रष्टाचार को कम करना था।

इस प्रणाली में, किसानों या काश्तकारों को भूमि का मालिक माना जाता था। उनके पास स्वामित्व अधिकार थे और वे भूमि को बेच सकते थे, गिरवी रख सकते थे या उपहार में दे सकते थे।

21. (a)

- कई ब्रिटिश गवर्नर-जनरलों ने ऐसी नीतियाँ और सुधार लागू किए, जिनका भारतीय समाज, शासन और क्षेत्रीय अखंडता पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके कार्यों ने औपनिवेशिक भारत के राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया और अक्सर इसका सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी हुआ।
- **लॉर्ड डलहौजी – विधवा पुनर्विवाह:** लॉर्ड डलहौजी ने सामाजिक सुधारों का समर्थन किया, जिसमें 1856 का **विधवा पुनर्विवाह अधिनियम** भी शामिल था, जिसने भारत में विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दी। यह विधवाओं की स्थिति सुधारने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था।
- **लॉर्ड रिपन – स्थानीय स्व-शासन:** लॉर्ड रिपन को अक्सर भारत में "स्थानीय स्व-शासन का जनक" कहा जाता है। उन्होंने 1880 के दशक में स्थानीय स्व-शासन की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसने नगरपालिका और स्थानीय बोर्डों के माध्यम से शासन में स्थानीय भागीदारी की नींव रखी।
- **लॉर्ड कर्जन – बंगाल का विभाजन:** लॉर्ड कर्जन को 1905 में **बंगाल के विभाजन** के लिए कुख्यात रूप से जाना जाता है। इस विभाजन ने बंगाल को दो प्रांतों में बाँट दिया, जिसका व्यापक विरोध हुआ और इसे 1911 में रद्द कर दिया गया। इसे "विभाजित करो और शासन करो" की नीति के रूप में देखा गया, जिसमें साम्प्रदायिक विभाजन को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया।
- **लॉर्ड वेलेजली – सहायक संधि प्रणाली का परिचय:** लॉर्ड वेलेजली ने **सहायक संधि प्रणाली** शुरू की, जो एक ऐसी नीति थी जिसने ब्रिटिशों को भारतीय रियासतों पर नियंत्रण स्थापित करने की अनुमति दी। इस नीति के तहत ब्रिटिश सैनिकों की तैनाती और विदेश मामलों का नियंत्रण ब्रिटिशों के हाथों में आ गया। इस नीति ने भारत में ब्रिटिश प्रभाव को काफी हद तक बढ़ाया।

22. (c)

यंग बंगाल आंदोलन, जिसका नेतृत्व **हेनरी लुइस विवियन डेरोज़ियो** ने किया, 19वीं शताब्दी की शुरुआत में **हिंदू कॉलेज, कलकत्ता** के छात्रों के बीच उभरा। इस आंदोलन की विशेषता प्रबोधन विचारों, तर्कशीलता, और पारंपरिक रीति-रिवाजों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण को अपनाने में थी।

- हेनरी लुइस विवियन डेरोज़ियो इस आंदोलन के प्रमुख व्यक्ति थे। हिंदू कॉलेज, कलकत्ता में एक शिक्षक के रूप में उन्होंने अपने छात्रों को समाज के मानदंडों पर सवाल उठाने और आधुनिक, उदार विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।
- **यंग बंगाल समूह** ने तर्कवाद, धर्मनिरपेक्षता, और सामाजिक सुधार पर जोर दिया। सदस्यों ने तर्क का उपयोग करने की वकालत की और अंधविश्वासों एवं रूढ़िवादी प्रथाओं को खारिज कर दिया। यह युवाओं के बीच धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील सोच को बढ़ावा देने का एक अग्रणी प्रयास था।
- हालांकि, यह आंदोलन बौद्धिक रूप से प्रेरणादायक था, लेकिन इसे व्यापक प्रभाव या पूरे भारत में महत्वपूर्ण सामाजिक सुधार हासिल नहीं हो सका। इसका प्रभाव मुख्य रूप से **कलकत्ता और उसके निकटवर्ती बौद्धिक सर्कल** तक ही सीमित रहा और यह आम जनता के बीच एक व्यापक आंदोलन को प्रेरित करने में असफल रहा।

- यंग बंगाल समूह ने स्वतंत्रता, समानता, और तर्कशीलता जैसे **पश्चिमी आदर्शों** को बढ़ावा दिया। उन्होंने खुले तौर पर पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों और जाति प्रथाओं की आलोचना की और रूढ़िवादी सामाजिक संरचनाओं से दूर होने का समर्थन किया।

23. (a)

- **अखिल भारतीय किसान सभा (AIKS)** की स्थापना औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में किसानों की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का समाधान करने के लिए की गई थी। इसने किसानों को संगठित करने और उनके अधिकारों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विशेष रूप से भूमि सुधार, उचित कराधान, और शोषणकारी जमींदारी व्यवस्था से राहत के संबंध में।
- **स्थापना और नेतृत्व:** AIKS की स्थापना 1936 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ सत्र के दौरान की गई थी, जिसमें स्वामी सहजानंद सरस्वती इसके पहले अध्यक्ष बने। वह एक प्रमुख किसान नेता थे, जो किसानों के अधिकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे।
- **AIKS के उद्देश्य:** AIKS का उद्देश्य किसानों की शिकायतों को संबोधित करना था, जैसे कि भूमि सुधार की मांग, ऋण राहत, करों में कटौती, और शोषणकारी जमींदारी प्रथाओं का अंत। संगठन ने किसानों को संगठित करने और ग्रामीण भारत को प्रभावित करने वाले मुद्दों का नेतृत्व करने का प्रयास किया।
- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ संबंध:** हालाँकि AIKS का कांग्रेस के विभिन्न वामपंथी सदस्यों के साथ घनिष्ठ संबंध था, यह कांग्रेस पार्टी का आधिकारिक अंग नहीं था। AIKS ने कुछ हद तक स्वायत्तता बनाए रखी, और इसके उद्देश्य कभी-कभी कांग्रेस के उद्देश्यों की तुलना में अधिक कट्टरपंथी थे। दोनों संगठनों ने कभी-कभी सहयोग किया, लेकिन वे स्वतंत्र इकाइयाँ थीं।

24. (a)

यह उद्धरण **लाला लाजपत राय** को समर्पित है, जो एक प्रमुख भारतीय राष्ट्रवादी नेता और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने 1928 में लाहौर में साईमन कमीशन के खिलाफ एक प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश पुलिस द्वारा की गई बर्बर लाठीचार्ज के बाद यह बयान दिया। साईमन कमीशन में किसी भी भारतीय सदस्य को शामिल नहीं किया गया था, और इसे औपनिवेशिक उत्पीड़न के प्रतीक के रूप में व्यापक विरोध का सामना करना पड़ा।

- **इस बयान का महत्त्व:** लाला लाजपत राय का यह शक्तिशाली बयान ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनकी अडिग प्रतिबद्धता को दर्शाता है। लाठीचार्ज के बाद उनकी मृत्यु ने पूरे भारत में औपनिवेशिक विरोध की भावना को और अधिक तीव्र कर दिया और आगे की क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रेरित किया, जिसमें भगत सिंह और उनके साथियों की कार्रवाई भी शामिल थी, जिन्होंने उनकी मृत्यु का बदला लेने के लिए जिम्मेदार ब्रिटिश पुलिस अधिकारी को निशाना बनाया।

25. (b)

- **अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC)** की स्थापना 1927 में की गई थी और यह महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने वाले भारत के प्रमुख संगठनों में से एक बन गया। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति में सुधार करना और कानूनी सुधारों को बढ़ावा देना था।
- **AIWC की स्थापना** 1927 में महिलाओं के एक समूह द्वारा की गई, जिसमें कई प्रमुख सामाजिक सुधारक और शिक्षाविद शामिल थीं। इस संगठन का उद्देश्य महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देना और सामाजिक सुधारों की वकालत करना था। यह महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए कार्यरत था और बाल विवाह, महिलाओं के स्वास्थ्य, और साक्षरता जैसे मुद्दों पर काम करता था।
- यद्यपि **सरोजिनी नायडू** एक प्रमुख महिला अधिकारों की समर्थक और स्वतंत्रता आंदोलन की सदस्य थीं, लेकिन वह AIWC की संस्थापक सदस्यों में शामिल नहीं थीं। वह बाद में संगठन से जुड़ीं, लेकिन इसके प्रारंभिक गठन में उनकी भूमिका नहीं थी।
- **AIWC ने भारत में महिलाओं की कानूनी स्थिति को सुधारने के लिए कानूनी सुधारों पर जोर दिया।** इसने बाल विवाह, संपत्ति अधिकार, और महिला शिक्षा जैसे मुद्दों पर कानूनों की वकालत की, ताकि विधायी प्रक्रिया के माध्यम से व्यवस्थित परिवर्तन लाया जा सके।

26. (b)

- **कैबिनेट मिशन योजना 1946** ब्रिटिश सरकार का एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव था, जिसका उद्देश्य भारत के भविष्य के शासन पर चर्चा करना और विभाजन को रोकना था। यह एक ऐसा राजनीतिक ढांचा तैयार करने का प्रयास था जो विभिन्न भारतीय राजनीतिक समूहों, विशेषकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग, को संतुष्ट कर सके। इस मिशन के तीन सदस्य - ए.वी. अलेक्जेंडर, स्टैफोर्ड क्रिप्स, और पिथिक-लॉरेंस, रणनीतिक कारणों से भारत की एकता के पक्षधर थे।
- **कैबिनेट मिशन योजना** ने तीन-स्तरीय संघीय ढांचे का प्रस्ताव रखा, जिसमें एक संघ सरकार शामिल थी, जिसके पास सीमित शक्तियाँ थीं, और प्रांतों के क्षेत्रीय समूह शामिल थे। इस संरचना का उद्देश्य केंद्र और प्रांतों के बीच शक्ति संतुलन बनाना था, जिससे संघ को बनाए रखते हुए स्वायत्तता प्रदान की जा सके।
- इसके विपरीत, कैबिनेट मिशन योजना ने धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल का प्रस्ताव नहीं दिया। इसके बजाय, इसने धार्मिक बहुमत के आधार पर प्रांतों के समूहों को अनुमति देकर सांप्रदायिक चिंताओं को संबोधित करने का प्रयास किया, लेकिन पृथक निर्वाचक मंडल से परहेज किया, जो विभाजन का कारण बना था।
- इस योजना में भारत के लिए एक संविधान का मसौदा तैयार करने हेतु **संविधान सभा** के गठन का प्रस्ताव था। इस सभा का उद्देश्य भारतीय समाज के विविध हितों का प्रतिनिधित्व करना और स्वतंत्र भारत के लिए एक ढांचे का विकास करना था।
- कैबिनेट मिशन योजना ने स्पष्ट रूप से भारत के विभाजन को रोकने का प्रयास किया। हालाँकि इसने प्रांतों को कुछ हद तक स्वायत्तता के साथ समूह बनाने की अनुमति दी, लेकिन इसमें एक अलग पाकिस्तान का विकल्प शामिल नहीं था, क्योंकि ब्रिटिश भारत को एकीकृत रखना चाहते थे।

27. (d)

- भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कई कम प्रसिद्ध महिला नेताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी बहादुरी और स्वतंत्रता के प्रति समर्पण ने समर्थन जुटाने और ब्रिटिश शासन को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **प्रीतिलता वड्डेदार - पहरताली यूरोपियन क्लब पर हमला:** प्रीतिलता वड्डेदार एक भारतीय क्रांतिकारी थीं, जिन्होंने चटगांव के पहरताली यूरोपियन क्लब पर हमला किया, जहां "कुत्तों और भारतीयों का प्रवेश निषिद्ध है" का बोर्ड लगा था। यह कार्य सुर्या सेन द्वारा संचालित एक बड़े औपनिवेशिक विरोधी अभियान का हिस्सा था और भारतीय क्रांतिकारियों के संकल्प को दर्शाता था।
- **उषा मेहता - भूमिगत रेडियो स्टेशन:** उषा मेहता ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना की, जो प्रतिरोध के संदेश प्रसारित करता था और भारतीयों से स्वतंत्रता के संघर्ष में शामिल होने का आग्रह करता था। यह रेडियो स्टेशन आंदोलन के लिए एक शक्तिशाली संचार माध्यम बन गया।
- **मत्तंगिनी हाजरा - "वंदे मातरम" का उद्घोष करते हुए शहीद:** मत्तंगिनी हाजरा बंगाल की एक स्वतंत्रता सेनानी थीं, जो एक विरोध प्रदर्शन के दौरान "वंदे मातरम" का उद्घोष करते हुए शहीद हुईं। वह स्वतंत्रता संघर्ष में बलिदान और दृढ़ता का प्रतीक बन गईं।
- **बेगम रुकैया - महिला शिक्षा और सामाजिक सुधारों का समर्थन:** बेगम रुकैया बंगाल की एक प्रगतिशील नारीवादी और समाज सुधारक थीं, जिन्होंने महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक सुधार का समर्थन किया। उनके प्रयासों ने महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद की और भारतीय समाज में लैंगिक समानता की नींव रखी।

28. (a)

इल्बर्ट बिल विवाद 1883 औपनिवेशिक भारत में एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने नस्लीय तनाव और यूरोपीय समुदाय के भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण को उजागर किया। यह बिल वायसराय लॉर्ड रिपन की सरकार द्वारा न्यायपालिका में नस्लीय असमानताओं को कम करने के उद्देश्य से प्रस्तावित किया गया था, लेकिन भारत में ब्रिटिश निवासियों द्वारा इसका कड़ा विरोध किया गया।

- **इल्बर्ट बिल** ने प्रस्तावित किया कि भारतीय न्यायाधीशों को आपराधिक मामलों में ब्रिटिश अपराधियों का न्याय करने का अधिकार दिया जाना चाहिए। इससे पहले भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय लोगों का न्याय करने से प्रतिबंधित किया गया था, जो न्यायिक प्रणाली में नस्लीय भेदभाव को दर्शाता था।
- इस बिल का भारत में यूरोपीय समुदाय द्वारा तीव्र विरोध किया गया, जिन्हें लगा कि भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय मामलों में अधिकार देना उनकी विशेष स्थिति को कमजोर करता है। इस जोरदार विरोध के कारण बिल में संशोधन किए गए और इसकी शक्ति को सीमित कर दिया गया।

- यद्यपि इल्बर्ट बिल विवाद ने भारतीयों के बीच राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने में योगदान दिया, लेकिन इससे तुरंत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन नहीं हुआ। कांग्रेस की स्थापना 1885 में, इल्बर्ट बिल विवाद के दो साल बाद, भारतीय शिकायतों को संबोधित करने और सुधारों की मांग करने के लिए एक मंच के रूप में की गई थी।

29. (a)

- **क्रिप्स मिशन** को 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत भेजा गया था। इस मिशन के तहत सर स्टेफोर्ड क्रिप्स ने युद्ध के बाद भारत को डोमिनियन स्टेटस देने का प्रस्ताव रखा और संविधान बनाने के लिए एक संविधान सभा के गठन का प्रावधान किया।
- **महात्मा गाँधी** ने इस प्रस्ताव की कड़ी आलोचना की और इसे अपर्याप्त और असत्य करार दिया। उन्होंने इसे प्रसिद्ध रूप से "डूबते बैक का पूर्व-तिथि चेक" कहा, जिससे ब्रिटिश वादों पर उनके अविश्वास का संकेत मिला, विशेषकर तब जब यह प्रस्ताव उस समय आया जब स्वयं ब्रिटेन युद्ध के कारण कमजोर था।
- गाँधी की प्रतिक्रिया ने भारतीय नेताओं और ब्रिटिश सरकार के बीच बढ़ते अविश्वास को दर्शाया। क्रिप्स मिशन की विफलता ने अंततः अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन को जन्म दिया, जिसमें गाँधी और अन्य नेताओं ने ब्रिटिश शासन के तत्काल अंत की मांग की।

30. (a)

- **राम्पा विद्रोह (1922-1924)**, जिसे **मन्यम विद्रोह** के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश शासन के खिलाफ मद्रास प्रेसीडेंसी (वर्तमान आंध्र प्रदेश) के पहाड़ी क्षेत्रों में एक जनजातीय विद्रोह था। यह आंदोलन ब्रिटिश वन नीतियों से संबंधित जनजातीय असंतोषों पर आधारित था और इसका नेतृत्व अल्लूरी सीताराम राजू ने किया था।
- **अल्लूरी सीताराम राजू द्वारा नेतृत्व**: यह विद्रोह करिश्माई नेता अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में हुआ, जिन्होंने जनजातीय समुदायों को ब्रिटिश शोषण और दमनकारी नीतियों के खिलाफ संगठित किया।
- **वन अधिनियम के प्रति प्रतिक्रिया**: यह विद्रोह मुख्य रूप से ब्रिटिश द्वारा लागू किए गए दमनकारी वन अधिनियम के खिलाफ था, जिसने जनजातियों की वन संसाधनों तक पहुंच को प्रतिबंधित कर दिया, जिससे उनके पारंपरिक जीवन और आजीविका पर गंभीर प्रभाव पड़ा। यह अधिनियम औपनिवेशिक शासन द्वारा व्यापक शोषण और आर्थिक कठिनाई का प्रतीक बन गया।
- **विद्रोह का अंत**: अल्लूरी सीताराम राजू ने आत्मसमर्पण नहीं किया; अंततः उन्हें ब्रिटिश बलों ने पकड़ लिया और मार दिया। उनका आत्मसमर्पण न करना और उनका बलिदान उन्हें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक महानायक बना गया।

31. (a)

- भारतीय संविधान लोकसभा में अनुसूचित जातियों (SCs) और अनुसूचित जनजातियों (STs) के लिए सीटों का आरक्षण प्रदान करता है ताकि संसद में उनकी पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके। यह प्रावधान ऐतिहासिक अन्यायों को दूर करने और समावेशी शासन को बढ़ावा देने के लिए पेश किया गया था।
- वर्तमान संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार, लोकसभा में अनुसूचित जनजातियों (STs) के लिए 47 सीटें आरक्षित हैं।

32. (c)

न्यायिक समीक्षा भारतीय संविधान का एक मूलभूत पहलू है, जो न्यायपालिका को कानूनों और कार्यपालिका एवं विधायिका द्वारा किए गए कार्यों की संवैधानिकता की समीक्षा करने का अधिकार देता है। यह सिद्धांत संविधान की सर्वोच्चता बनाए रखने में सहायक है और सुनिश्चित करता है कि कोई भी कानून या कार्य संवैधानिक सिद्धांतों का उल्लंघन न करे।

- न्यायिक समीक्षा के माध्यम से न्यायपालिका, विशेष रूप से **सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालय**, किसी भी कानून को असंवैधानिक घोषित कर सकती है यदि वह मौलिक अधिकारों या संविधान के किसी अन्य प्रावधान का उल्लंघन करता है। यह प्रणाली विधायी और कार्यकारी शक्तियों पर नियंत्रण के रूप में कार्य करती है।
- भारत में **न्यायिक समीक्षा की अवधारणा संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से** ली गई है। यद्यपि यह भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लेखित नहीं है, इसे न्यायिक व्याख्या के माध्यम से मान्यता प्राप्त है, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट के **Marbury v. Madison** मामले में स्थापित उदाहरण के समान।

33. (b)

संसद को अनुच्छेद 368 के तहत संविधान के किसी भी भाग को, जिसमें मूल संरचना शामिल है, संशोधित करने की शक्ति है।

- **मूल संरचना सिद्धांत** भारतीय संवैधानिक कानून में एक न्यायिक सिद्धांत है, जो यह कहता है कि संविधान के कुछ मौलिक तत्वों को संसद संशोधन द्वारा बदल या नष्ट नहीं कर सकती। इस सिद्धांत को संविधान की अखंडता और आधारभूत सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए सर्वोच्च न्यायालय द्वारा स्थापित किया गया था।
- **केशवानंद भारती मामले में परिचय: मूल संरचना सिद्धांत** का परिचय 1973 के ऐतिहासिक **केशवानंद भारती मामले** में दिया गया था, जहाँ सर्वोच्च न्यायालय ने यह फैसला सुनाया कि अनुच्छेद 368 के तहत संसद के पास संविधान में संशोधन करने की व्यापक शक्तियाँ हैं, लेकिन वह संविधान की मूल संरचना या आवश्यक ढाँचे को बदल नहीं सकती।
- **संसद की शक्तियों पर सीमितता:** इसके विपरीत, संसद संविधान की मूल संरचना में संशोधन करने की शक्ति नहीं रखती। सर्वोच्च न्यायालय ने मूल संरचना सिद्धांत के माध्यम से संसद की कुछ प्रमुख सिद्धांतों को संशोधित करने की शक्ति को सीमित कर दिया, जिससे संविधान के मूल मूल्यों की सुरक्षा बनी रहे।
- **मूलभूत सिद्धांतों की सुनिश्चितता:** मूल संरचना सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, कानून का शासन, और न्यायिक स्वतंत्रता जैसे कुछ मौलिक सिद्धांत अपरिवर्तित रहें। ये सिद्धांत संविधान के चरित्र के लिए आवश्यक माने जाते हैं।
- **मिनर्वा मिल्स मामला:** इस सिद्धांत को 1980 के **मिनर्वा मिल्स मामले** में और अधिक मजबूती से स्थापित किया गया, जहाँ सर्वोच्च न्यायालय ने मूल संरचना सिद्धांत को संविधान के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा उपाय के रूप में पुनः पुष्टि की। इस निर्णय ने इस विचार को मजबूत किया कि संसद संविधान की मूल पहचान को नहीं बदल सकती।

34. (b)

- **मौलिक कर्तव्यों** को भारतीय संविधान में नागरिकों को राष्ट्र के प्रति उनके नैतिक उत्तरदायित्वों की याद दिलाने के लिए शामिल किया गया था। ये कर्तव्य संविधान के भाग IVA में संहिताबद्ध हैं और राष्ट्रीय एकता और जिम्मेदारी को बढ़ावा देने के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।
- **42वें संशोधन के माध्यम से समावेशन: मौलिक कर्तव्यों** को 1976 के **42वें संशोधन अधिनियम** के माध्यम से जोड़ा गया था, न कि 44वें संशोधन के माध्यम से। ये सोवियत संघ के संविधान से प्रेरित थे और इनका उद्देश्य देशभक्ति और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा देना था।
- **मौलिक कर्तव्यों का लागू होना:** मौलिक कर्तव्य कानूनी रूप से लागू नहीं हैं। ये नैतिक दायित्व हैं जो नागरिकों का मार्गदर्शन करने के लिए बनाए गए हैं, लेकिन इनके पालन न करने पर कोई कानूनी प्रतिबंध या दंड नहीं है। इनका समावेश मुख्य रूप से प्रतीकात्मक है और नागरिक जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करने के लिए किया गया है।
- **सद्भावना और भाईचारे को बढ़ावा देना:** मौलिक कर्तव्यों में से एक कर्तव्य भारत के सभी लोगों के बीच सद्भावना और सामान्य भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना है, जो धार्मिक, भाषाई, क्षेत्रीय या सांप्रदायिक विविधताओं से ऊपर उठता है।

35. (a)

- **ड्यू प्रोसेस ऑफ लॉ का सिद्धांत** यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत अधिकारों को प्रभावित करने वाले कानून केवल एक निर्धारित प्रक्रिया का पालन करने के बजाय निष्पक्ष, न्यायसंगत और उचित होने चाहिए। इस व्याख्या को **मनुका गाँधी बनाम भारत संघ** मामले (1978) में सुप्रीम कोर्ट द्वारा अपनाया गया था, जो अनुच्छेद 21 के संदर्भ में है, जो जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार सुनिश्चित करता है।
- **मनुका गाँधी मामला: मनुका गाँधी बनाम भारत संघ** (1978) मामले में सुप्रीम कोर्ट ने अनुच्छेद 21 की व्याख्या को व्यापक किया और 'ड्यू प्रोसेस ऑफ लॉ' का सिद्धांत प्रस्तुत किया। सुप्रीम कोर्ट ने यह कहा कि जीवन और स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले किसी भी कानून को केवल प्रक्रिया का पालन करने से अधिक, तार्किकता की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए।
- **अन्य मामले: ए.के. गोपालन बनाम मद्रास राज्य** (1950) ने प्रारंभ में "प्रोसीजर एस्टैब्लिशड बाय लॉ" के सिद्धांत का समर्थन किया और अनुच्छेद 21 की एक संकीर्ण व्याख्या प्रदान की। **केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य**

(1973) ने मूल संरचना सिद्धांत से संबंधित मामला था। एस.आर. बोम्मई बनाम भारत संघ (1994) संघवाद और अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग पर केंद्रित था।

36. (b)

- **संवैधानिक उपचार का अधिकार** भारतीय संविधान द्वारा प्रदान किया गया एक मौलिक अधिकार है, जो नागरिकों को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सीधे न्यायपालिका से संपर्क करने की अनुमति देता है।
- राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान, इस अधिकार को सामान्य रूप से निलंबित नहीं किया जा सकता। केवल कुछ अधिकार, जैसे अनुच्छेद 19 के तहत अधिकार, प्रतिबंधित हो सकते हैं।
- अनुच्छेद 32 के तहत, नागरिक मौलिक अधिकारों के कार्यान्वयन के लिए सीधे सर्वोच्च न्यायालय का रुख कर सकते हैं।

37. (c)

- **संविधान** अनुच्छेद 32 और अनुच्छेद 226 के तहत मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के रिट प्रदान करता है। ये रिट न्यायालयों को विशिष्ट आदेश और निर्देश जारी करने की अनुमति देते हैं ताकि सत्ता के दुरुपयोग को रोका जा सके और न्याय सुनिश्चित किया जा सके।
- **हैबियस कॉर्पस:** हैबियस कॉर्पस रिट का उपयोग किसी व्यक्ति को अवैध रूप से हिरासत में लिए जाने पर उसे रिहा करने के लिए किया जाता है, जो मनमानी हिरासत के खिलाफ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करता है।
- **मैंडमस:** मैंडमस रिट उस स्थिति में जारी की जाती है जब किसी निचली अदालत या सरकारी अधिकारी को एक विशेष कर्तव्य का पालन करने का आदेश देना होता है, जिसे वे कानूनी रूप से करने के लिए बाध्य होते हैं। इसका उपयोग सार्वजनिक कर्तव्यों को लागू करने के लिए किया जाता है।
- **सर्टिओरारी:** सर्टिओरारी रिट का उपयोग तब किया जाता है जब कोई निचली अदालत या न्यायाधिकरण अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर या प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करके निर्णय लेता है। यह किसी मामले को स्थानांतरित करने के बजाय निचली अदालत के निर्णय को शून्य करने के लिए होता है।
- **क्रो वारंटो:** क्रो वारंटो का उपयोग किसी व्यक्ति के सार्वजनिक पद पर बने रहने के अधिकार को चुनौती देने के लिए किया जाता है, जिससे यदि उस व्यक्ति के पास कानूनी अधिकार नहीं है, तो उसे पद छोड़ने के लिए मजबूर किया जा सके।

38. (a)

- **भारतीय संविधान** को कई अनुसूचियों में व्यवस्थित किया गया है, जिनमें प्रत्येक का संबंध विशेष प्रशासनिक और कानूनी पहलुओं से है। ये अनुसूचियाँ शासन की संरचना को व्यवस्थित करने और विभिन्न संवैधानिक मामलों पर स्पष्टता प्रदान करने में सहायक हैं।
- **अनुसूची I** राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के नाम और उनके क्षेत्रीय सीमाओं का विवरण प्रदान करती है।
- **अनुसूची III** उन शपथों और घोषणाओं के रूपों को निर्दिष्ट करती है, जिन्हें सार्वजनिक अधिकारियों, जैसे न्यायाधीशों, मंत्रियों, और विधायकों द्वारा लिया जाना आवश्यक है।
- **अनुसूची IV** प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश के लिए राज्यसभा में सीटों के आवंटन का विवरण देती है।
- **अनुसूची VII** संघ, राज्य, और समवर्ती सूची को शामिल करती है, जो उन विषयों को परिभाषित करती है जिन पर इन स्तरों की सरकारें कानून बना सकती हैं।

39. (b)

जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार पूर्ण है और किसी भी परिस्थिति में प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता।

- भारत में **मौलिक अधिकार**, संविधान के भाग III में संहिताबद्ध हैं, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं की रक्षा करते हैं और न्याय, समानता, और गरिमा सुनिश्चित करते हैं। हालांकि, कुछ अधिकारों पर उचित प्रतिबंध लगाए गए हैं ताकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक हित के बीच संतुलन बना रहे।
- **अनुच्छेद 14 के तहत समानता का अधिकार** कानून के समक्ष समानता और सभी व्यक्तियों के लिए कानूनों के समान संरक्षण की गारंटी देता है। यह सुनिश्चित करता है कि राज्य सभी के साथ समान व्यवहार करे और भेदभाव के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करे।

- **अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार** पूर्ण नहीं है। इसे उचित प्रक्रिया के तहत, जैसे कि कैद या मृत्युदंड के मामलों में, कानून द्वारा सीमित किया जा सकता है। इसलिए, यह अधिकार न्यायिक व्याख्या और कुछ कानूनी सीमाओं के अधीन है।
- **धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार** यह सुनिश्चित करता है कि राज्य सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करे, धर्मनिरपेक्षता का समर्थन करे और धार्मिक भेदभाव को रोके।
- **शोषण के विरुद्ध अधिकार** मानव तस्करी, बंधुआ मजदूरी और व्यक्तियों के शोषण को रोकता है, जिससे समाज के कमजोर वर्गों की ऐसी दुर्व्यवहारों से सुरक्षा होती है।

40. (c)

- **लोकसभा** भारत की संसद का निचला सदन है और इसमें विधायी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसमें धन विधेयकों का पारित होना शामिल है, जो देश की वित्तीय व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं।
- **सत्रों के लिए कोरम:** लोकसभा में सत्र की बैठक के लिए कोरम उसके कुल सदस्यता का एक-दसवां भाग होता है, न कि एक-तिहाई।
- **लोकसभा में धन विधेयक:** धन विधेयक केवल लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है और इसके आगे बढ़ने के लिए लोकसभा की स्वीकृति आवश्यक होती है। राज्यसभा केवल सिफारिशें कर सकती है, लेकिन वह किसी धन विधेयक में संशोधन या उसे अस्वीकार नहीं कर सकती।
- **संसद के संयुक्त सत्र में अध्यक्ष की भूमिका:** लोकसभा के अध्यक्ष संसद के संयुक्त सत्रों की अध्यक्षता करते हैं। यदि वे अनुपस्थित हों, तो राज्यसभा के उपाध्यक्ष संयुक्त सत्र की अध्यक्षता करते हैं।

41. (c)

केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य (1973) मामले में स्थापित **मूल संरचना सिद्धांत** अनुच्छेद 368 के तहत संविधान के कुछ मूल तत्वों को संशोधित करने की संसद की शक्ति को सीमित करता है। संविधान का **संघीय चरित्र** इसकी मूल संरचना का हिस्सा है, जो संघ और राज्यों के बीच शक्ति संतुलन को बनाए रखता है। यह प्रावधान राज्यों की स्वायत्तता और सहयोगी संघीय ढांचे को सुनिश्चित करता है। संघीय प्रकृति में परिवर्तन या इसे हटाने वाले संशोधन असंवैधानिक माने जाते हैं, क्योंकि इससे यह संतुलन बाधित होता है। संघीय चरित्र के विपरीत, मौलिक अधिकार, राज्य नीति के निदेशक तत्व और शेष विधायी शक्तियाँ संशोधित की जा सकती हैं, बशर्ते वे मूल संरचना का उल्लंघन न करें।

42. (a)

- दलबदल विरोधी कानून को विधायकों द्वारा राजनीतिक दल बदलने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने के लिए पेश किया गया था, जो राजनीतिक स्थिरता को कमजोर करता था। इसे 1985 के 52वें संशोधन अधिनियम के माध्यम से संविधान में दसवीं अनुसूची के रूप में जोड़ा गया।
- **52वें संशोधन अधिनियम, 1985 के माध्यम से समावेशन:** दलबदल विरोधी कानून को 52वें संशोधन अधिनियम के माध्यम से पेश किया गया था ताकि निर्वाचनों के बाद सांसदों द्वारा दल बदलने की घटनाओं को रोका जा सके।
- **अयोग्यता का निर्णय:** दलबदल विरोधी कानून के तहत अयोग्यता का निर्णय संबंधित सदन के अध्यक्ष या सभापति द्वारा किया जाता है, न कि चुनाव आयोग द्वारा।
- **कानून का उद्देश्य:** दलबदल विरोधी कानून का उद्देश्य दलबदल को रोकना और चुनावों के बाद दल बदलने वाले सदस्यों को अयोग्य करार देकर राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करना है।

43. (d)

- संसदीय समितियाँ संसद के कार्यों का अभिन्न अंग हैं, जो वित्त, प्रशासन और शासन सहित विभिन्न मामलों पर विस्तृत जांच और निगरानी प्रदान करती हैं।
- **लोक लेखा समिति (PAC):** लोक लेखा समिति कैग (नियंत्रक और महालेखा परीक्षक) द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टों की जांच करती है ताकि सरकारी खर्चों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके। अतः विकल्प (a) सही ढंग से मेल खाता है।

- **अनुमान समिति:** अनुमान समिति सरकारी खर्च की समीक्षा करती है और इसे अधिक कुशल बनाने के लिए नीतियों का सुझाव देती है। इसलिए, विकल्प (b) सही ढंग से मेल खाता है।
- **सार्वजनिक उपक्रम समिति:** सार्वजनिक उपक्रम समिति सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के कार्यों का मूल्यांकन करती है और उनकी कुशलता सुनिश्चित करती है। अतः विकल्प (c) सही ढंग से मेल खाता है।
- **नियम समिति:** नियम समिति चुनाव संचालन से संबंधित नहीं है, बल्कि संसदीय कार्यों के सुव्यवस्थित संचालन के लिए प्रक्रियाओं और नियमों की सिफारिश करती है।

44. (d)

- **भारत की संचित निधि** भारत सरकार का प्रमुख वित्तीय खाता है। इसमें सभी सरकारी राजस्व और व्यय शामिल हैं, और संसद की अनुमति के बिना इसमें से कोई भी राशि नहीं निकाली जा सकती।
- **राजस्व और ऋण:** सरकार द्वारा प्राप्त सभी राजस्व और उठाए गए ऋण भारत की संचित निधि में जमा किए जाते हैं।
- **संसदीय अनुमति:** इस निधि से कोई भी धन संसद की अनुमति के बिना नहीं निकाला जा सकता। यह सरकारी व्यय पर विधायी निगरानी सुनिश्चित करता है।
- **CAG की लेखा परीक्षण भूमिका:** नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) संचित निधि का लेखा परीक्षण करने के लिए उत्तरदायी हैं, जो पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

45. (a)

- **संसदीय प्रस्ताव** सांसदों द्वारा मुद्दों को उठाने, सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने और चिंताओं को व्यक्त करने के उपकरण हैं। प्रत्येक प्रस्ताव का एक विशिष्ट उद्देश्य होता है।
- **स्थगन प्रस्ताव:** स्थगन प्रस्ताव का उपयोग एक विशेष महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करने के लिए किया जाता है, जिसमें सामान्य कार्यों को रोककर उस मुद्दे पर चर्चा की जाती है।
- **अविश्वास प्रस्ताव:** अविश्वास प्रस्ताव का उपयोग सदन का सरकार में विश्वास का आकलन करने के लिए किया जाता है। यदि प्रस्ताव पारित हो जाता है, तो सरकार को इस्तीफा देना होता है।
- **निंदा प्रस्ताव:** निंदा प्रस्ताव का उपयोग किसी मंत्री या सरकार की नीतियों या कार्यों की आलोचना करने के लिए किया जाता है। यह एक प्रकार की फटकार है, लेकिन इससे सरकार का इस्तीफा अनिवार्य नहीं होता।
- **ध्यानार्कषण प्रस्ताव:** ध्यानार्कषण प्रस्ताव एक सांसद को किसी महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दे पर मंत्री से उत्तर प्राप्त करने की अनुमति देता है, जिससे समय पर उत्तरदायित्व सुनिश्चित होता है।

46. (b)

- महासागरीय धाराएँ तटीय क्षेत्रों की जलवायु को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ठंडी धाराएँ आमतौर पर शुष्क हवा लाती हैं, जिससे आसन्न तटीय क्षेत्रों में शुष्क स्थिति उत्पन्न होती है। अफ्रीका के दक्षिण-पश्चिमी तट को एक ऐसी ठंडी धारा प्रभावित करती है जो नामिब मरुस्थल के शुष्क जलवायु में महत्वपूर्ण योगदान करती है।
- **बेंगुएला धारा:** बेंगुएला धारा एक ठंडी महासागरीय धारा है जो अफ्रीका के दक्षिण-पश्चिमी तट के साथ उत्तर की ओर बहती है। यह दक्षिणी महासागर से ठंडा, पोषक तत्वों से भरपूर पानी लाती है, जो ऊपर की हवा को ठंडा करता है और नामिब मरुस्थल की शुष्क स्थिति का कारण बनता है।
- **अन्य विकल्प:** कैनरी धारा अफ्रीका के उत्तर-पश्चिमी तट के साथ बहती है और ठंडा पानी लाती है, लेकिन यह दक्षिण-पश्चिमी तट को प्रभावित नहीं करती। अगुल्हास धारा एक गर्म धारा है जो अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी तट के साथ बहती है। हम्बोल्ट धारा दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ बहती ठंडी धारा है, जो अटाकामा मरुस्थल की शुष्कता में योगदान करती है।

47. (a)

- दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों की हवाओं में उनकी उत्पत्ति और मार्ग के आधार पर विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं, जो स्थानीय जलवायु स्थितियों को प्रभावित करती हैं।

- **चिनूक:** चिनूक एक गर्म, शुष्क हवा है जो उत्तरी अमेरिका के रॉकी पर्वतों से नीचे उतरती है। यह तापमान को तेजी से बढ़ाती है और अक्सर बर्फ को जल्दी पिघला देती है।
- **फोहन:** फोहन वास्तव में एक गर्म, शुष्क हवा है, जो आल्प्स के पर्वतों की छाया वाली घाटियों में उतरती है। यह ठंडी, गीली हवा नहीं है।
- **मिस्त्रल:** मिस्त्रल भूमध्यसागरीय क्षेत्र में उत्तर-पश्चिम से चलने वाली ठंडी हवा है, जो विशेष रूप से दक्षिणी फ्रांस को प्रभावित करती है और क्षेत्र में ठंडी, शुष्क हवा लाती है।
- **सिरोको:** सिरोको उत्तरी अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान से उत्पन्न गर्म, शुष्क हवा है, जो विशेष रूप से इटली और ग्रीस जैसे दक्षिणी यूरोप के क्षेत्रों को प्रभावित करती है।

48. (c)

- ज्वालामुखी विस्फोट से वातावरण में राख और सल्फर डाइऑक्साइड के उत्सर्जन के कारण वैश्विक जलवायु पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। ये कण सूर्य की किरणों को परावर्तित करते हैं, जिससे पृथ्वी की सतह पर अस्थायी ठंडक प्रभाव उत्पन्न होता है।
- **माउंट तम्बोरा (1815):** 1815 में इंडोनेशिया में माउंट तम्बोरा का विस्फोट इतिहास के सबसे शक्तिशाली विस्फोटों में से एक था। इसने विशाल मात्रा में राख और गैसों को समतापमंडल में छोड़ दिया, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक ठंडक और 1816 में "ग्रीष्म ऋतु के बिना वर्ष" का कारण बना। इससे उत्तरी अमेरिका और यूरोप के कुछ हिस्सों में फसलें विफल हुईं और अकाल पड़े।
- **अन्य विकल्प:** माउंट क्राकाटोआ का विस्फोट 1883 में हुआ था, जिसने अस्थायी वैश्विक ठंडक का कारण बना। माउंट वेसुवियस का 79 ईस्वी में विस्फोट पोम्पेई को नष्ट कर दिया था। माउंट सेंट हेलेन्स का विस्फोट 1980 में हुआ, जिससे स्थानीय स्तर पर नुकसान हुआ, लेकिन वैश्विक जलवायु पर प्रभाव नहीं पड़ा।

49. (c)

- चाड झील, जो मध्य अफ्रीका में स्थित है, लाखों लोगों के लिए पानी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और व्यापक स्थानीय मत्स्य पालन को समर्थन देती है। हालांकि, जलवायु परिवर्तन, सूखे, और कृषि के लिए पानी के मोड़ के कारण यह झील तेजी से घट रही है।
- **चाड झील:** चाड झील ने पिछले कुछ दशकों में अपने आकार में नाटकीय कमी का अनुभव किया है। इस घटने से स्थानीय मत्स्य पालन और उन समुदायों पर गंभीर प्रभाव पड़ा है, जो झील पर आजीविका के लिए निर्भर हैं। इस झील के संकुचन को जलवायु परिवर्तन और इसमें बहने वाली नदियों के जल को अन्यत्र मोड़ने के कारण माना जाता है।
- **अन्य विकल्प:** विक्टोरिया झील अफ्रीका की सबसे बड़ी झील है और यह भी स्थानीय मत्स्य पालन को समर्थन देती है, लेकिन इसमें चाड झील के पैमाने पर संकुचन नहीं देखा गया है। टैंगानिका झील और मलावी झील बड़े अफ्रीकी जलाशय हैं जिनमें सक्रिय मत्स्य पालन होता है, लेकिन इनमें कोई महत्वपूर्ण संकुचन नहीं देखा गया है।

50. (a)

- ये द्वीपसमूह विभिन्न महासागरों और समुद्रों में स्थित हैं, जिनमें प्रत्येक का अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र और भौगोलिक विशेषताएं हैं। उनकी स्थिति स्थानीय जैव विविधता, जलवायु, और समुद्री मार्गों को प्रभावित करती है।
- **गैलापागोस द्वीप - प्रशांत महासागर:** गैलापागोस द्वीप इक्वाडोर के तट से दूर प्रशांत महासागर में स्थित हैं। अपने अनोखे जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध, ये द्वीप चार्ल्स डार्विन के विकास के सिद्धांत के लिए महत्वपूर्ण थे।
- **फैरो द्वीप - उत्तर अटलांटिक महासागर:** फैरो द्वीप उत्तर अटलांटिक महासागर में आइसलैंड और नॉर्वे के बीच स्थित हैं। वे अपने कठोर भूभाग और पारंपरिक मछली पकड़ने वाले समुदायों के लिए जाने जाते हैं।
- **अज़ोर्स - उत्तर अटलांटिक महासागर:** अज़ोर्स एक द्वीपसमूह है जो उत्तर अटलांटिक महासागर में स्थित है और पुर्तगाल का हिस्सा है।
- **सेशेल्स - भारतीय महासागर:** सेशेल्स अफ्रीका के पूर्वी तट के पास भारतीय महासागर में स्थित हैं। वे अपनी सुंदर समुद्र तटों और विविध समुद्री जीवन के लिए प्रसिद्ध हैं।

51. (a)

भूमध्यसागरीय जलवायु को गर्म, शुष्क ग्रीष्म और ठंडी, आर्द्र सर्दियों के रूप में जाना जाता है। यह जलवायु पैटर्न भूमध्यसागर के आस-पास के क्षेत्रों में आम है और कैलिफोर्निया, दक्षिण ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के कुछ हिस्सों में भी पाया जाता है।

उपोष्णकटिबंधीय उच्च-दाब बेल्ट और पश्चिमी पवनों का प्रभाव:

- गर्मियों के दौरान, भूमध्यसागरीय क्षेत्र उपोष्णकटिबंधीय उच्च-दाब बेल्ट के प्रभाव में आता है, जो शुष्क और स्थिर परिस्थितियाँ लाता है और गर्म, शुष्क मौसम का कारण बनता है।
- सर्दियों में, पश्चिमी पवनें दक्षिण की ओर स्थानांतरित होती हैं, जिससे क्षेत्र में नम हवा और वर्षा आती है, जिससे आर्द्र सर्दियों का निर्माण होता है।

52. (a)

जल निकायों की लवणता वाष्पीकरण, ताजे पानी की प्रवाह और भौगोलिक स्थिति जैसे कारकों के कारण बदलती है। सामान्यतः, उन समुद्रों में जहाँ वाष्पीकरण दर अधिक होती है और ताजे पानी का प्रवाह कम होता है, वहाँ लवणता अधिक होती है।

लवणता का क्रम:

- **बाल्टिक सागर:** इसमें प्रमुख समुद्रों में सबसे कम लवणता होती है, क्योंकि इसमें नदियों से ताजे पानी का प्रवाह अधिक होता है और वाष्पीकरण कम होता है।
- **काला सागर:** बाल्टिक सागर की तुलना में थोड़ा अधिक लवणीय होता है, लेकिन फिर भी नदी प्रवाह और कम वाष्पीकरण के कारण तुलनात्मक रूप से कम लवणीय है।
- **भूमध्यसागर:** इसमें उच्च लवणता होती है, क्योंकि वाष्पीकरण दर अधिक होती है और ताजे पानी का प्रवाह सीमित होता है।
- **लाल सागर:** इसे बहुत अधिक लवणता के लिए जाना जाता है, जो अत्यधिक वाष्पीकरण दर और नदियों के प्रवाह के कम से कम होने के कारण होती है।

53. (d)

टेक्टोनिक सीमाएँ वहाँ होती हैं जहाँ पृथ्वी की टेक्टोनिक प्लेट्स मिलती हैं, और ये सीमा के प्रकार के अनुसार विशेष भूवैज्ञानिक विशेषताएँ उत्पन्न करती हैं - डायवर्जेंट, कन्वर्जेंट, ट्रांसफॉर्म, या सबडक्शन।

- **डायवर्जेंट सीमा - मिड-अटलांटिक रिज:**
एक डायवर्जेंट सीमा वह होती है जहाँ प्लेटें अलग होती हैं, जिससे नई परत का निर्माण होता है। मिड-अटलांटिक रिज इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ यूरोशियन और उत्तरी अमेरिकी प्लेटें अलग हो रही हैं।
- **कन्वर्जेंट सीमा - हिमालय पर्वत:**
एक कन्वर्जेंट सीमा वह होती है जहाँ दो प्लेटें टकराती हैं, जिससे पर्वत श्रृंखलाएँ बनती हैं। हिमालय पर्वत भारतीय और यूरोशियन प्लेटों के टकराव से बने हैं।
- **ट्रांसफॉर्म सीमा - सैन एंड्रियास फॉल्ट:**
एक ट्रांसफॉर्म सीमा वह होती है जहाँ प्लेटें एक-दूसरे के पास से सरकती हैं। कैलिफोर्निया में सैन एंड्रियास फॉल्ट एक प्रसिद्ध ट्रांसफॉर्म फॉल्ट है, जहाँ प्रशांत प्लेट उत्तरी अमेरिकी प्लेट के विपरीत दिशा में सरकती है।
- **सबडक्शन जोन - मारियाना ट्रेंच:**
एक सबडक्शन जोन वह होता है जहाँ एक प्लेट दूसरी के नीचे धकेली जाती है, जिससे गहरे समुद्री गर्त बनते हैं। मारियाना ट्रेंच, जो विश्व का सबसे गहरा समुद्री गर्त है, प्रशांत प्लेट के मारियाना प्लेट के नीचे धंसने से बना है।

54. (b)

हॉर्स लैटिट्यूड्स वे उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र हैं जो भूमध्य रेखा से लगभग 30 डिग्री उत्तर और दक्षिण में स्थित होते हैं। इन क्षेत्रों में उच्च वायुमंडलीय दबाव और न्यूनतम हवाओं की विशेषता होती है, जिसके कारण यहाँ शांत और शुष्क परिस्थितियाँ होती हैं।

हॉर्स लैटिट्यूड्स की जलवायु स्थिति:

इन क्षेत्रों में उच्च दबाव के कारण वायु नीचे की ओर उतरती है, जो बादलों का निर्माण और वर्षा को हतोत्साहित करता है। इसके परिणामस्वरूप शांत, शुष्क परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, जो इन अक्षांशों में सहारा और ऑस्ट्रेलियाई रेगिस्तानों जैसे रेगिस्तानों के निर्माण में योगदान देती हैं।

अन्य विकल्प:

उच्च वर्षा और चक्रवातीय गतिविधियाँ भूमध्य रेखा के पास या मध्य अक्षांशों के कम दबाव वाले क्षेत्रों की विशेषताएँ हैं, न कि हॉर्स लैटिट्यूड्स की।

मजबूत पश्चिमी हवाएँ मध्य अक्षांशों में पाई जाती हैं, जो हॉर्स लैटिट्यूड्स के शांत क्षेत्रों के बाहर होती हैं।

55. (a)

किबिथू अरुणाचल प्रदेश के अंजॉ जिले का एक छोटा शहर है, जो भारत-चीन सीमा के पास स्थित है। यह भारत का सबसे पूर्वी बिंदु है, जो लोहित नदी के निकट स्थित है और रक्षा के लिए एक रणनीतिक बिंदु के रूप में कार्य करता है।

56. (a)

भारत की कई प्रमुख नदियों के महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं जो उनके जल प्रवाह और भौगोलिक विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

- **गोदावरी – वैनगंगा:** वैनगंगा गोदावरी नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है, जो महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश से होकर बहती है।
- **नर्मदा – बरना:** बरना नर्मदा नदी की सहायक नदी है। यह मध्य प्रदेश में बहती है और इस क्षेत्र में सिंचाई और अन्य गतिविधियों के लिए प्रमुख जल स्रोत है। बरना नदी पर बना बरना बाँध 1978 में पूरा हुआ था।
- **कृष्णा – तुंगभद्रा:** तुंगभद्रा नदी, कृष्णा नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है, जो कर्नाटक और आंध्र प्रदेश से होकर बहती है।
- **महानदी – सियोनाथ:** सियोनाथ नदी महानदी की मुख्य सहायक नदियों में से एक है, जो छत्तीसगढ़ क्षेत्र से होकर बहती है।

57. (a)

हिमालयी दर्रे ऐतिहासिक रूप से भारत और पड़ोसी देशों के बीच महत्वपूर्ण व्यापार और यात्रा मार्ग के रूप में कार्य करते रहे हैं। प्रत्येक दर्रा रणनीतिक रूप से स्थित है, जो व्यापार, रक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रभावित करता है।

- **नाथूला दर्रा:** नाथूला दर्रा, जो सिक्किम में स्थित है, भारत और चीन के बीच एक प्रमुख व्यापार मार्ग है। यह सिक्किम राज्य को चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र से जोड़ता है और प्राचीन काल से एक ऐतिहासिक व्यापार मार्ग रहा है।
- **अन्य विकल्प:** शिपकी ला हिमाचल प्रदेश में स्थित है और भारत को तिब्बत से जोड़ता है, लेकिन यह सिक्किम में नहीं है।
- लिपुलेख दर्रा उत्तराखंड में स्थित है और कैलाश मानसरोवर की ओर जाने का मार्ग है।
- रोहतांग दर्रा हिमाचल प्रदेश में है, जो कुल्लू घाटी को लाहौल और स्पीति से जोड़ता है, लेकिन यह भारत-चीन सीमा पर नहीं है।

58. (b)

भारत में राष्ट्रीय जलमार्ग आंतरिक जल परिवहन मार्ग हैं, जो देश के भीतर परिवहन संपर्क को बढ़ाने के लिए निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक राष्ट्रीय जलमार्ग का एक विशेष मार्ग है, जो महत्वपूर्ण शहरों और बंदरगाहों को जोड़ता है।

- राष्ट्रीय जलमार्ग 2 ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली है जो असम में फैली हुई है और पश्चिम बंगाल से जुड़ते हुए कोलकाता के बंदरगाह शहर तक जाती है। यह पूर्वोत्तर भारत में व्यापार और परिवहन को सुगम बनाती है।
- राष्ट्रीय जलमार्ग 1 गंगा-भागीरथी-हुगली नदी प्रणाली पर फैला है, जो इलाहाबाद से हल्दिया तक जाता है।
- राष्ट्रीय जलमार्ग 3 केरल में स्थित है, जो पश्चिम तट नहर को कोल्लम से कोट्टापुरम तक कवर करता है।
- राष्ट्रीय जलमार्ग 4 आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में कृष्णा और गोदावरी नदी प्रणालियों को कवर करता है।

59. (c)

भारत में विविध प्रकार की मृदाएँ पाई जाती हैं, जो भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर भिन्न होती हैं और उनके भौतिक और रासायनिक गुणों के अनुसार उनकी कृषि उपयुक्तता पर प्रभाव पड़ता है।

- काली मृदा में उच्च नमी धारण क्षमता होती है, जिससे यह कपास की खेती के लिए आदर्श बनती है। इसे रेगुर मृदा भी कहा जाता है और यह मुख्यतः दक्कन पठार में पाई जाती है।
- लाल मृदा लौह से समृद्ध होती है, जिससे इसका रंग लाल होता है। यह मुख्य रूप से पूर्वी और दक्षिणी भारत जैसे ओडिशा और तमिलनाडु में पाई जाती है।
- लेटराइट मृदा सामान्यतः कम उर्वरता वाली होती है क्योंकि इसमें लीचिंग की प्रक्रिया से पोषक तत्वों का हास होता है, और यह लौह और एल्युमिनियम से समृद्ध होती है। यह आमतौर पर कर्नाटक और केरल जैसे अधिक वर्षा वाले पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है और चावल की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है।
- जलोढ़ मृदा उपजाऊ होती है और इंडो-गंगा के मैदान जैसी नदी घाटियों में पाई जाती है। यह गेहूँ और चावल जैसे फसलों की खेती के लिए उपयुक्त है।

60. (c)

भारत में कई प्राकृतिक झीलें विभिन्न राज्यों में फैली हुई हैं, जिनमें से प्रत्येक का अद्वितीय पारिस्थितिक और भौगोलिक महत्व है।

- **लोकतक झील – मणिपुर:**
लोकतक झील मणिपुर की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है और यह अपने फुमदी (वनस्पतियों और मिट्टी के तैरते हुए भूखंडों) के लिए जानी जाती है।
- **चिलिका झील – ओडिशा:**
चिलिका झील एक खारे पानी की लैगून झील है, जो ओडिशा में स्थित है। यह भारत की सबसे बड़ी तटीय लैगून में से एक है और प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण आवास है।
- **सांभर झील – राजस्थान:**
सांभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारे पानी की झील है, जो राजस्थान में स्थित है। यह नमक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
- **वुलर झील – जम्मू और कश्मीर:**
वुलर झील जम्मू और कश्मीर की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। यह कश्मीर घाटी की जल प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

61. (c)

वस्तु एवं सेवा कर (GST) को 2017 में भारत में कई अप्रत्यक्ष करों को एक एकल कर प्रणाली में समाहित करने के उद्देश्य से पेश किया गया था। इसका उद्देश्य वस्तुओं और सेवाओं पर अप्रत्यक्ष करों की जटिलता को कम करना और कर प्रक्रिया को सरल बनाना था।

- **सेवा कर और GST:**
सेवा कर एक अप्रत्यक्ष कर था जो सेवाओं पर लगाया जाता था और GST के तहत समाहित किया गया ताकि सेवाओं पर कराधान को सरल बनाया जा सके। GST के तहत, वस्तुओं और सेवाओं दोनों पर समान रूप से कर लगाया जाता है, जिससे सेवा कर की अलग आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
- अन्य विकल्प:
 - कॉरपोरेशन टैक्स एक प्रत्यक्ष कर है जो कॉरपोरेट मुनाफे पर लगाया जाता है और यह GST का हिस्सा नहीं है।
 - कस्टम ड्यूटी आयात और निर्यात पर लगाया जाता है और GST के दायरे में नहीं आता है।
 - स्टॉप ड्यूटी संपत्ति लेनदेन पर राज्य-स्तरीय कर है और इसे भी GST के तहत समाहित नहीं किया गया है।

62. (b)

बेरोजगारी के प्रकार इसके कारणों पर निर्भर करते हैं, जैसे कि आर्थिक चक्र, मौसमी कारक, कौशल का असामान्यता, और नौकरी संक्रमण। प्रत्येक प्रकार की बेरोजगारी विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित करती है और इसके समाधान के लिए विशेष नीतियाँ आवश्यक होती हैं।

- फ्रीक्शनल बेरोजगारी: यह बेरोजगारी उस समय होती है जब व्यक्ति नई नौकरियाँ खोजते हुए या नौकरियों के बीच में होते हैं।
- स्ट्रक्चरल बेरोजगारी: यह तब होती है जब कार्यकर्ता के कौशल और उपलब्ध नौकरियों की आवश्यकताओं के बीच असमानता होती है। यह अक्सर तकनीकी उन्नति या उद्योग की मांग में बदलाव के कारण होती है।
- सीजनल बेरोजगारी: यह कृषि और संबंधित क्षेत्रों में आम है, जहाँ कार्य उपलब्धता मौसम या फसल चक्र पर निर्भर होती है।
- साइक्लिकल बेरोजगारी: यह व्यावसायिक चक्र के चरणों से संबंधित होती है, जहाँ आर्थिक मंदी के दौरान बेरोजगारी बढ़ती है और विकास के समय घटती है।

63. (a)

भारत की पंचवर्षीय योजनाएँ आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन पर केंद्रित थीं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। छठी पंचवर्षीय योजना (1980-1985) का उद्देश्य ग्रामीण आय और उत्पादकता में सुधार के लिए एकीकृत ग्रामीण विकास पर जोर देना था।

- **एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (IRDP):**

IRDP को छठी पंचवर्षीय योजना के दौरान शुरू किया गया था और इसका उद्देश्य ग्रामीण गरीबों को आत्म-रोजगार के अवसर प्रदान करना था। यह भारत में एकीकृत ग्रामीण विकास के क्षेत्र में पहला प्रमुख प्रयास था, जिसका उद्देश्य छोटे और सीमांत किसानों, भूमिहीन मजदूरों और ग्रामीण कारीगरों का उत्थान करना था।

- **अन्य विकल्प:** स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY) 1999 में शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार को बढ़ावा देना था।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) 2000 में ग्रामीण संपर्क में सुधार के लिए शुरू की गई थी।
- वर्षा-सिंचित क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय जलग्रहण विकास परियोजना (NWDPA) 1990 में शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य वर्षा-सिंचित कृषि क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना था।

64. (b)

विनिमय दर प्रणाली में देश विभिन्न दृष्टिकोण अपना सकते हैं। एक प्रबंधित फ्लोट प्रणाली में केंद्रीय बैंक कभी-कभी मुद्रा को स्थिर करने के लिए हस्तक्षेप करता है, जबकि मुक्त फ्लोटिंग प्रणाली में मुद्रा का मूल्य पूरी तरह से बाजार की ताकतों द्वारा निर्धारित किया जाता है।

- **मुक्त फ्लोटिंग विनिमय दर में अधिक अस्थिरता:**

मुक्त फ्लोटिंग विनिमय दर प्रणाली में परिवर्तन का अर्थ होगा कि भारतीय रुपया का मूल्य पूरी तरह से विदेशी मुद्रा बाजार में मांग और आपूर्ति द्वारा निर्धारित किया जाएगा, और भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) का हस्तक्षेप नहीं होगा। इससे विनिमय दर में अधिक अस्थिरता हो सकती है, क्योंकि इसमें उतार-चढ़ाव बाजार की गतिशीलता, वैश्विक पूँजी प्रवाह, आर्थिक स्थितियाँ और निवेशकों की भावना पर निर्भर करेगा।

- **अन्य विकल्प:**

मुद्रा की सराहना पर बढ़ा हुआ नियंत्रण असंभव होगा, क्योंकि मुक्त फ्लोटिंग प्रणाली में केंद्रीय बैंक का मुद्रा के मूल्य को प्रभावित करने की भूमिका सीमित हो जाएगी।

- संकट के समय में विनिमय दर का स्थिरीकरण कम संभावना है, क्योंकि बिना केंद्रीय बैंक हस्तक्षेप के मुद्रा सीधे बाजार की स्थितियों पर प्रतिक्रिया करेगी।
- मुद्रा मूल्य की पूर्वानुमानिता कम होगी, क्योंकि विनिमय दर अप्रत्याशित बाजार कारकों से प्रभावित होगी।

65. (d)

भारत में विभिन्न विशेषीकृत वित्तीय संस्थान स्थापित किए गए हैं जो विशिष्ट आर्थिक क्षेत्रों की सेवा करते हैं, जिनमें से प्रत्येक का उद्देश्य उन क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देना है।

- **NABARD:**
NABARD (नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट) का ध्यान कृषि और ग्रामीण विकास वित्तपोषण पर है, जो ग्रामीण बुनियादी ढाँचे, कृषि और संबद्ध क्षेत्रों को समर्थन प्रदान करता है।
- **SIDBI:**
SIDBI (स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया) का उद्देश्य भारत में MSMEs (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों) के वित्तपोषण और विकास को बढ़ावा देना है।
- **EXIM बैंक:**
EXIM बैंक (एक्सपोर्ट-इंपोर्ट बैंक ऑफ इंडिया) निर्यात और आयात को बढ़ावा देने के लिए वित्तपोषण प्रदान करता है। यह भारतीय व्यवसायों को वैश्विक व्यापार में सहायता करता है।
- **NHB:**
NHB (नेशनल हाउसिंग बैंक) का ध्यान आवास वित्त और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों के नियमन पर है, न कि स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढाँचे पर। यह भारत में किफायती आवास विकास और बंधक ऋण का समर्थन करता है।

66. (c)

केंद्रीय बजट में पूँजीगत व्यय का आशय संपत्तियों और बुनियादी ढाँचे की परियोजनाओं पर खर्च से है, जिससे दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। इसमें सड़कों, रेलवे, ऊर्जा और डिजिटल बुनियादी ढाँचे जैसे क्षेत्रों में निवेश शामिल है।

- **बजट 2024-25 का पूँजीगत व्यय प्रावधान:**

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए कुल पूँजीगत व्यय का प्रावधान ₹11.1 लाख करोड़ निर्धारित किया गया है, जो आर्थिक उत्पादकता बढ़ाने और रोजगार सृजन के लिए बुनियादी ढाँचे के विकास पर निरंतर जोर का संकेत है।

67. (d)

भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ प्रत्येक एक विशिष्ट आर्थिक मॉडल पर आधारित थीं, जो देश की विकासात्मक प्राथमिकताओं के अनुसार तैयार की गई थीं। यहाँ योजनाओं का उनके संबंधित मॉडलों से मिलान किया गया है:

- **प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956)**

- **मॉडल:** हैरोड-डोमर मॉडल
- इस योजना का ध्यान कृषि उत्पादन बढ़ाने और संसाधनों की कमी का सामना कर रही अर्थव्यवस्था के लिए संतुलित विकास पर केंद्रित था। हैरोड-डोमर मॉडल, जो बचत और निवेश को विकास के चालक मानता है, इस प्रारंभिक चरण के लिए उपयुक्त था।

- **द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956-1961)**

- **मॉडल:** महालनोबिस मॉडल
- इस योजना में भारी उद्योगों में तेजी से औद्योगीकरण पर जोर दिया गया ताकि एक मजबूत औद्योगिक आधार बनाया जा सके। सांख्यिकीविद पी.सी. महालनोबिस द्वारा विकसित महालनोबिस मॉडल ने पूँजीगत वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता दी, जिससे आयात पर निर्भरता कम हो और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिले।

- **तृतीय पंचवर्षीय योजना (1961-1966)**

- **मॉडल:** सुकमय चक्रवर्ती मॉडल
- इस योजना का उद्देश्य एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का निर्माण था और इसमें कृषि और उद्योग पर जोर दिया गया। अर्थशास्त्री सुकमय चक्रवर्ती द्वारा प्रस्तावित मॉडल ने इस योजना को कृषि और औद्योगिक विकास के बीच संतुलन बनाने के लिए निर्देशित किया।

- **चतुर्थ पंचवर्षीय योजना (1969-1974)**

- **मॉडल:** गाडगिल सूत्र
- इस योजना का ध्यान असमानताओं को कम करने, गरीबी उन्मूलन, और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने पर था। राज्यों को संसाधनों के आवंटन में उपयोग किया गया गाडगिल सूत्र, चौथी योजना के लिए न्यायसंगत विकास दृष्टिकोण को आकार देने में प्रभावी था।

68. (b)

सकल मूल्य वर्धन (GVA) बुनियादी कीमतों पर अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन का एक माप है, जिसमें करों को बाहर रखा जाता है लेकिन उत्पादों पर सब्सिडी शामिल होती है। यह विभिन्न क्षेत्रों द्वारा जोड़े गए मूल्य को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण मेट्रिक है।

- अप्रत्यक्ष करों का बहिष्कार: GVA की गणना में बुनियादी कीमतों पर उत्पादों पर अप्रत्यक्ष करों को शामिल नहीं किया जाता है, क्योंकि GVA वास्तविक उत्पादन मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें करों जैसी अतिरिक्त लागतें शामिल नहीं होती हैं।
- अन्य घटक:
- उत्पादों पर सब्सिडी को शामिल किया जाता है क्योंकि यह उत्पादन की लागत को कम करती है।
- कर्मचारियों का मुआवजा और स्थिर पूँजी की खपत (अर्थात् वेतन, मजदूरी, और उत्पादन में क्षय) भी GVA का हिस्सा होते हैं।

69. (d)

जीएसटी परिषद् भारत में एक संवैधानिक निकाय है जो वस्तु एवं सेवा कर नीतियों, कर दरों और विनियमों पर निर्णय लेने की जिम्मेदार है। इसमें केंद्रीय और राज्य सरकारों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।

कथन 1 – जीएसटी परिषद् की अध्यक्षता: जीएसटी परिषद् की अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री करते हैं, प्रधानमंत्री नहीं। इसलिए, यह कथन गलत है।

कथन 2 – जीएसटी परिषद् में निर्णय-प्रक्रिया: जीएसटी परिषद् में निर्णय लेने के लिए तीन-चौथाई बहुमत की आवश्यकता होती है, जिसमें केंद्र सरकार की एक-तिहाई (33%) वोटिंग शक्ति और राज्यों की दो-तिहाई (67%) वोटिंग शक्ति होती है। यह कथन सही है।

कथन 3 – केंद्र और राज्यों की समान मतदान शक्ति: यह कथन गलत है। केंद्र की एक-तिहाई (33%) मतदान शक्ति है, जबकि राज्यों की सामूहिक रूप से दो-तिहाई (67%) मतदान शक्ति है। इस व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि न तो केंद्र और न ही राज्य अकेले निर्णय ले सकें।

70. (c)

केंद्रीय बजट 2024-25 का मुख्य ध्यान महत्वपूर्ण पूंजीगत व्यय के माध्यम से विकास को बढ़ावा देने पर था, विशेष रूप से बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए। बुनियादी ढाँचे में निवेश कनेक्टिविटी में सुधार, उद्योगों का समर्थन, और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।

- **बुनियादी ढाँचे को उच्चतम आवंटन:** 2024-25 के बजट में बुनियादी ढाँचे को सबसे अधिक आवंटन दिया गया, जो परिवहन, लॉजिस्टिक्स और डिजिटल बुनियादी ढाँचे के आधुनिकीकरण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस आवंटन का उद्देश्य दीर्घकालिक उत्पादकता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

71. (c)

अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति विभिन्न कारकों से प्रभावित हो सकती है। जब घरेलू मुद्रा की सराहना होती है, तो आयातित वस्तुएँ और कच्चा माल सस्ते हो जाते हैं, जिससे मुद्रास्फीति के दबाव को कम करने में मदद मिल सकती है।

○ **घरेलू मुद्रा की सराहना:**

जब घरेलू मुद्रा की सराहना होती है, तो आयात की लागत घट जाती है, जिससे आयातित वस्तुओं और कच्चे माल की कीमतें कम हो जाती हैं। यह कम लागत मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद कर सकती है, खासकर उन देशों में जो आयात पर निर्भर हैं।

○ **अन्य विकल्प:**

■ **उच्च उपभोक्ता मांग** आमतौर पर मुद्रास्फीति के दबाव को बढ़ाती है।

■ **वैश्विक तेल कीमतों में वृद्धि** उत्पादन और परिवहन लागत को बढ़ाती है, जो मुद्रास्फीति में योगदान करती है।

- **विस्तारवादी राजकोषीय नीति**, जिसमें सरकार के खर्च में वृद्धि या करों में कटौती शामिल होती है, आमतौर पर मांग को बढ़ाती है और संभवतः मुद्रास्फीति में वृद्धि करती है।

72. (c)

प्रेषण वे वित्तीय हस्तांतरण हैं जो प्रवासी श्रमिक अपने गृह देश में भेजते हैं। भारत लगातार शीर्ष प्रेषण प्राप्त करने वाले देशों में से एक रहा है, जो विदेशी मुद्रा भंडार और आर्थिक स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

○ 2023 में कुल प्रेषण प्रवाह:

आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार, भारत ने 2023 में USD 120 बिलियन का प्रेषण प्राप्त किया, जिससे यह वैश्विक स्तर पर शीर्ष प्रेषण प्राप्तकर्ता के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत करता है। यह प्रवाह देश के **भुगतान संतुलन** को समर्थन देता है और घरेलू आय में योगदान करता है।

73. (b)

सिक्ल सेल एनीमिया एक आनुवंशिक रक्त विकार है जो हीमोग्लोबिन को प्रभावित करता है, जो लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाने वाला प्रोटीन है और पूरे शरीर में ऑक्सीजन को पहुँचाने का कार्य करता है।

● **हीमोग्लोबिन में उत्परिवर्तन:**

सिक्ल सेल एनीमिया हीमोग्लोबिन प्रोटीन में एक उत्परिवर्तन के कारण होता है, विशेष रूप से **बीटा-ग्लोबिन जीन (HBB)** में, जो हीमोग्लोबिन S (HbS) नामक एक असामान्य हीमोग्लोबिन रूप का निर्माण करता है। यह लाल रक्त कोशिकाओं को दरांती के आकार का बना देता है, जिससे रक्त प्रवाह में रुकावट हो सकती है और दर्द व अंग क्षति का कारण बन सकता है।

● **अन्य विकल्प:**

- **इंसुलिन** रक्त शर्करा स्तर को नियंत्रित करता है, लेकिन इसका सिक्ल सेल एनीमिया से कोई संबंध नहीं है।
- **कोलेजन** संयोजी ऊतक का संरचनात्मक प्रोटीन है।
- **मयोसिन** एक मोटर प्रोटीन है जो मांसपेशियों के संकुचन में शामिल है।

74. (a)

टाइप 1 मधुमेह एक ऑटोइम्यून विकार है जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अग्न्याशय में इंसुलिन उत्पादक बीटा कोशिकाओं पर हमला करती है और उन्हें नष्ट कर देती है, जिससे रक्त शर्करा का स्तर उच्च हो जाता है।

● **टाइप 1 मधुमेह:**

इस विकार में प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से इंसुलिन उत्पादक बीटा कोशिकाओं को निशाना बनाकर नष्ट कर देती है, जिससे इंसुलिन का उत्पादन असंभव हो जाता है, जो कि ग्लूकोज विनियमन के लिए आवश्यक है।

● **अन्य विकल्प:**

- **टाइप 2 मधुमेह** इंसुलिन प्रतिरोध से संबंधित है, न कि ऑटोइम्यून विनाश से।
- **एडिसन रोग** अधिवृक्क ग्रंथि के असामान्य कार्य से जुड़ा है।
- **कुशिंग सिंड्रोम** उच्च कॉर्टिसोल स्तर की विशेषता है, बीटा कोशिकाओं के विनाश से संबंधित नहीं है।

75. (d)

पादप हार्मोन पौधों की वृद्धि, विकास, और तनाव के प्रति प्रतिक्रिया में विशिष्ट भूमिकाएँ निभाते हैं। प्रत्येक हार्मोन के विशिष्ट कार्य होते हैं जो पौधों को पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार प्रतिक्रिया करने में सहायक होते हैं।

- **ऑक्सिन:** ऑक्सिन शीर्ष प्रभुत्व को बढ़ावा देता है, जिसमें मुख्य तना प्रमुखता से बढ़ता है और पार्श्व कलियों के विकास को रोकता है ताकि पौधा ऊर्ध्वाधर रूप से बढ़ सके।
- **साइटोकाइनिन:** साइटोकाइनिन क्लोरोफिल, न्यूक्लिक एसिड, और प्रोटीन के विघटन को रोकते हैं, जिससे पौधे की वृद्धावस्था को विलंबित करने में सहायता मिलती है।
- **एब्सिसिक एसिड:** एब्सिसिक एसिड (एबीए) रंध्रों को बंद करने में महत्वपूर्ण होता है, जिससे तनाव के दौरान पौधा पानी को संरक्षित कर सकता है और यह बीजों में निष्क्रियता (डॉर्मेसी) लाने में भी सहायक है।
- **एथिलीन:** एथिलीन एक ऐसा हार्मोन है जो फलों के पकने को बढ़ावा देता है और पत्तियों के वृद्धावस्था और झड़ने में भी शामिल होता है।

76. (b)

कोलेस्ट्रॉल को रक्त में लिपोप्रोटीन द्वारा ले जाया जाता है, जो घनत्व में भिन्न होते हैं और हृदय स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव के अनुसार जाने जाते हैं। **लो-डेंसिटी लिपोप्रोटीन (LDL)** को "खराब कोलेस्ट्रॉल" कहा जाता है क्योंकि यह कोलेस्ट्रॉल को रक्त वाहिकाओं की दीवारों पर जमा करने की प्रवृत्ति रखता है, जिससे प्लाक का निर्माण होता है और हृदय रोग का जोखिम बढ़ता है।

- **लो-डेंसिटी लिपोप्रोटीन (LDL) – खराब कोलेस्ट्रॉल:**

LDL कोलेस्ट्रॉल को यकृत से ऊतकों तक ले जाता है। अधिक मात्रा में LDL धमनियों की दीवारों में कोलेस्ट्रॉल जमा कर सकता है, जिससे प्लाक बनता है जो धमनियों को संकीर्ण और कठोर बनाता है, जो हृदय रोग, दिल का दौरा और स्ट्रोक का कारण बन सकता है।

- **अन्य विकल्प:**

- **हाई-डेंसिटी लिपोप्रोटीन (HDL)** को "अच्छा कोलेस्ट्रॉल" माना जाता है क्योंकि यह रक्तप्रवाह से अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल को हटाकर इसे वापस यकृत तक ले जाने में मदद करता है।
- **वेरी-लो-डेंसिटी लिपोप्रोटीन (VLDL)** मुख्यतः ट्राइग्लिसराइड्स को ले जाता है और हृदय रोग के जोखिम से संबंधित है, लेकिन इसे "खराब कोलेस्ट्रॉल" विशेष रूप से नहीं कहा जाता।
- **चायलोमाइक्रॉन** आहार वसा को आंतों से शरीर के अन्य भागों में ले जाता है और LDL की तरह कोलेस्ट्रॉल स्तर से सीधे जुड़ा नहीं है।

77. (c)

DNA की संरचना दो पूरक स्ट्रैंड्स से बनी होती है जो एक डबल हेलिक्स बनाने के लिए एक साथ जुड़ी होती हैं। इन स्ट्रैंड्स के बीच का बंधन DNA की स्थिरता और प्रतिकृति को समझने में महत्वपूर्ण है।

- **DNA में हाइड्रोजन बंधन:**

DNA में, हाइड्रोजन बंधन दो स्ट्रैंड्स के नाइट्रोजनस बेस के बीच बनते हैं, विशेष रूप से **एडेनिन और थाइमिन (A-T)** और **साइटोसिन और गुआनिन (C-G)** के बीच। ये हाइड्रोजन बंधन डबल-स्ट्रैंडेड संरचना को स्थिर करते हैं, लेकिन ये इतने कमजोर होते हैं कि DNA प्रतिकृति के दौरान स्ट्रैंड्स को अलग होने की अनुमति देते हैं।

78. (c)

विटामिन आवश्यक पोषक तत्व होते हैं और इन्हें जल-घुलनशील या वसा-घुलनशील के रूप में वर्गीकृत किया गया है। **जल-घुलनशील विटामिन** शरीर में संग्रहित नहीं हो सकते और इसलिए इन्हें नियमित रूप से सेवन करना आवश्यक होता है।

- **जल-घुलनशील विटामिन – विटामिन C:**

विटामिन C एक जल-घुलनशील विटामिन है, जिसका अर्थ है कि यह पानी में घुल जाता है और शरीर में संग्रहित नहीं होता। आहार के माध्यम से इसका नियमित सेवन आवश्यक है ताकि इसकी कमी से **स्कर्वी** जैसे रोगों को रोका जा सके।

- **अन्य विकल्प:**

- **विटामिन A, D, और K** वसा-घुलनशील विटामिन हैं, जिसका अर्थ है कि ये शरीर के वसा ऊतकों में संग्रहित हो सकते हैं और दैनिक सेवन की आवश्यकता नहीं होती।

79. (a)

DNA कोशिकाओं में आनुवंशिक पदार्थ है, जो एक **डबल हेलिक्स** संरचना में होता है और इसमें विशिष्ट बेस पेयरिंग होती है। यह मुख्य रूप से यूकेरियोटिक कोशिकाओं के नाभिक में पाया जाता है, लेकिन यह माइटोकॉन्ड्रिया जैसे अन्य ऑर्गेनेल्स में भी पाया जा सकता है।

- **सही कथन:**

- **कथन 1:** DNA वास्तव में दोहरे-स्ट्रैंड वाला होता है और एक हेलिकल संरचना बनाता है, जिसे **डबल हेलिक्स** कहा जाता है।

- **कथन 2:** DNA में एडेनिन थाइमिन के साथ और साइटोसिन गुआनिन के साथ **हाइड्रोजन बंधन** के माध्यम से जुड़ता है, जो डबल-हेलिक्स संरचना को स्थिर रखता है।

- **गलत कथन:**

- **कथन 3:** हालांकि DNA मुख्य रूप से यूकेरियोटिक कोशिकाओं के नाभिक में पाया जाता है, यह माइटोकॉन्ड्रिया (और पौधों में क्लोरोप्लास्ट) में भी मौजूद होता है। अतः यह कथन आंशिक रूप से गलत है।

80. (c)

एंजाइम जैविक उत्प्रेरक होते हैं जो शरीर में रासायनिक प्रतिक्रियाओं की गति को बढ़ाते हैं बिना खुद उपयोग हुए। प्रत्येक एंजाइम एक विशिष्ट प्रतिक्रिया या प्रकार की प्रतिक्रिया के लिए विशिष्ट होता है।

- **कथन (c) गलत है** क्योंकि एंजाइम जिस प्रतिक्रिया को उत्प्रेरित करते हैं उसमें उपयोग नहीं होते हैं। वे अपरिवर्तित रहते हैं और एक ही प्रतिक्रिया को बार-बार उत्प्रेरित करने में सक्षम होते हैं।
- **अन्य विकल्प:**
 - **कथन (a) सही है:** एंजाइम जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं को तेज करते हैं।
 - **कथन (b) सही है:** अधिकांश एंजाइम प्रोटीन होते हैं।
 - **कथन (d) सही है:** एंजाइम अत्यधिक विशिष्ट होते हैं और आमतौर पर केवल एक प्रकार की प्रतिक्रिया को उत्प्रेरित करते हैं।

81. (b)

रोग विभिन्न रोगजनकों जैसे कि बैक्टीरिया, वायरस और प्रोटोजोआ से उत्पन्न हो सकते हैं। **प्रोटोजोआ परजीवी** एकल-कोशिकीय जीव होते हैं जो अक्सर मच्छरों जैसे वाहकों के माध्यम से विशिष्ट रोग पैदा करते हैं।

- **मलेरिया – प्रोटोजोआ परजीवी द्वारा उत्पन्न:**

मलेरिया **प्लास्मोडियम** नामक प्रोटोजोआ परजीवी के कारण होता है, जिसमें **Plasmodium falciparum**, **Plasmodium vivax**, **Plasmodium ovale**, और **Plasmodium malariae** जैसी प्रजातियाँ शामिल हैं। यह परजीवी संक्रमित मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से मनुष्यों में संचारित होता है, जिससे बुखार, कंपकंपी और एनीमिया जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं।

- **अन्य विकल्प:**

- **हैजा** *Vibrio cholerae* नामक बैक्टीरिया के कारण होता है, जो गंभीर दस्त और निर्जलीकरण का कारण बनता है।
- **तपेदिक** *Mycobacterium tuberculosis* नामक बैक्टीरिया के कारण होता है, जो मुख्यतः फेफड़ों को प्रभावित करता है।
- **टाइफाइड** *Salmonella typhi* नामक बैक्टीरिया के कारण होता है, जिससे बुखार, कमजोरी और जठरांत्र संबंधी लक्षण उत्पन्न होते हैं।

82. (a)

माइटोसिस एक कोशिका विभाजन की प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप दो समान पुत्री कोशिकाएँ बनती हैं, जिनमें माता कोशिका के समान संख्या में गुणसूत्र होते हैं। माइटोसिस के चरण एक विशिष्ट क्रम में होते हैं ताकि आनुवंशिक पदार्थ का सही वितरण सुनिश्चित हो सके।

- **माइटोसिस के चरणों का सही क्रम:**

- **प्रोफेज:** क्रोमैटिन संकुचित होकर दृश्यमान गुणसूत्र बनाता है, और माइटोटिक स्पिंडल का निर्माण शुरू होता है।
- **मेटाफेज:** गुणसूत्र कोशिका के मध्य तल पर संरेखित होते हैं, विभाजन के लिए तैयार होते हैं।
- **एनाफेज:** सिस्टर क्रोमैटिड्स को अलग करके कोशिका के विपरीत ध्रुवों की ओर खींचा जाता है।
- **टेलोफेज:** क्रोमैटिड्स ध्रुवों तक पहुँच जाते हैं, और प्रत्येक सेट के चारों ओर एक नाभिकीय झिल्ली पुनः निर्मित होती है, जिससे विभाजन पूरा होता है।

इस प्रकार सही क्रम 2, 1, 4, 3 है, जिससे विकल्प (a) सही है।

83. (b)

प्रकृति में मौलिक बलों की मध्यस्थता विशिष्ट कणों द्वारा होती है, जिन्हें **बल वाहक** या **गेज बोसोन** कहा जाता है। **मजबूत परमाणु बल** इन मौलिक बलों में से एक है और यह परमाणु नाभिक को एक साथ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

● **ग्लूऑन – मजबूत परमाणु बल का मध्यस्थ:**

ग्लूऑन वे एक्सचेंज कण हैं जो मजबूत परमाणु बल की मध्यस्थता करते हैं। ये क्वार्क्स के बीच कार्य करते हैं, उन्हें प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के अंदर एक साथ बाँधते हैं और इस प्रकार परमाणु नाभिक की अखंडता बनाए रखते हैं।

● **अन्य विकल्प:**

○ **फोटॉन** विद्युत चुंबकीय बल का मध्यस्थ है।

○ **W बोसोन और Z बोसोन** कमजोर परमाणु बल की मध्यस्थता करते हैं, जो कुछ प्रकार के रेडियोधर्मी क्षय के लिए उत्तरदायी होता है।

○ **न्यूट्रिनो** कमजोर अंतःक्रियाओं में शामिल होते हैं लेकिन किसी भी बल की मध्यस्थता नहीं करते।

84. (a)

विद्युत चुंबकीय स्पेक्ट्रम विकिरण प्रकारों को उनके तरंग दैर्घ्य और आवृत्ति के अनुसार व्यवस्थित करता है। जैसे-जैसे तरंग दैर्घ्य बढ़ता है, ऊर्जा और आवृत्ति घटती है।

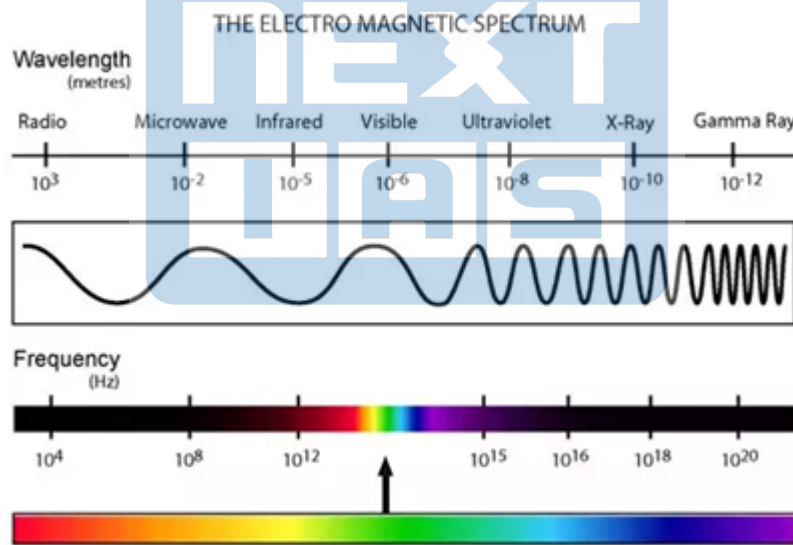
● **बढ़ते तरंग दैर्घ्य का सही क्रम:**

○ **X-रे** का तरंग दैर्घ्य अल्ट्रावायलेट से छोटा होता है।

○ **अल्ट्रावायलेट** का तरंग दैर्घ्य इन्फ्रारेड से छोटा होता है।

○ **इन्फ्रारेड** का तरंग दैर्घ्य माइक्रोवेव से छोटा होता है।

○ **माइक्रोवेव** में दिए गए विकल्पों में सबसे लंबा तरंग दैर्घ्य होता है।



इस प्रकार सही क्रम **X-रे, अल्ट्रावायलेट, इन्फ्रारेड, माइक्रोवेव** या 3, 1, 2, 4 है, जिससे विकल्प (a) सही है।

85. (a)

न्यूटन का प्रथम गति नियम, जिसे जड़त्व का नियम भी कहा जाता है, यह कहता है कि कोई वस्तु तब तक अपनी गति या स्थिरता बनाए रखेगी जब तक कि उस पर कोई बाहरी बल कार्य न करे। यह नियम समझाता है कि जब कार अचानक रुकती है, तो यात्री का शरीर, जड़त्व के कारण, आगे की ओर बढ़ता रहता है।

● **अन्य विकल्प:**

○ **न्यूटन का द्वितीय नियम** बल, द्रव्यमान और त्वरण के बीच संबंध को समझाता है।

- **न्यूटन का तृतीय नियम** कहता है कि प्रत्येक क्रिया के बराबर और विपरीत प्रतिक्रिया होती है।
- **गुरुत्वाकर्षण का नियम** द्रव्यमानों के बीच गुरुत्वाकर्षण आकर्षण से संबंधित है, जो इस संदर्भ में जड़त्व से संबंधित नहीं है।

86. (b)

प्रकाश के तरंग गुणधर्मों में **हस्तक्षेप**, **विवर्तन**, और **ध्रुवीकरण** शामिल हैं। **विवर्तन** प्रकाश तरंगों का अवरोधों के चारों ओर मुड़ना और छोटी दरारों से होकर फैलना है, जो प्रकाश के तरंग स्वभाव को दर्शाता है।

- **तरंग स्वभाव और विवर्तन:**

विवर्तन तब होता है जब प्रकाश तरंगें अवरोध या संकीर्ण दरार से गुजरती हैं और मुड़कर फैलने लगती हैं। यह घटना केवल प्रकाश के तरंग स्वभाव से ही समझाई जा सकती है।

- **अन्य विकल्प:**

- **फोटोइलेक्ट्रिक प्रभाव** और **कॉम्प्टन प्रभाव** प्रकाश के कणीय स्वभाव द्वारा समझाए जाते हैं।
- **रेडियोधर्मी क्षय** एक परमाणु घटना है और प्रकाश के तरंग या कणीय स्वभाव से संबंधित नहीं है।

87. (a)

प्रेशर कुकर एक सील किया हुआ वातावरण बनाता है जो अंदर का दबाव बढ़ाता है और इसके परिणामस्वरूप पानी का क्वथनांक भी बढ़ जाता है, जिससे खाना पकाने की दक्षता बढ़ती है।

- **उच्च उबालने का तापमान:**

प्रेशर कुकर के भीतर बढ़ा हुआ दबाव पानी के उबालने के बिंदु को मानक 100°C से अधिक कर देता है। इस उच्च तापमान के कारण भोजन तेज़ी से पकता है क्योंकि यह अधिक गर्मी के संपर्क में आता है।

- **अन्य विकल्प:**

- **क्वथनांक कम करने से** खाना पकाने की गति धीमी हो जाती।
- **पानी के वाष्पीकरण को रोकना** और **सीधे गर्मी जोड़ना** विशेष रूप से प्रेशर कुकर में तेज़ी से पकने के तंत्र को स्पष्ट नहीं करते हैं।

88. (c)

तरंगों को उनके कणों की गति की दिशा के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। अनुप्रस्थ तरंगों में कणों की गति तरंग की दिशा के लंबवत होती है, जबकि अनुदैर्ध्य तरंगों में कणों की गति तरंग की दिशा के समानांतर होती है।

- **गलत कथन – हवा में ध्वनि तरंगें:**

हवा में ध्वनि तरंगें अनुदैर्ध्य तरंगें होती हैं, अर्थात् माध्यम के कण तरंग के प्रसार की दिशा के समानांतर गति करते हैं। इसलिए, "हवा में ध्वनि तरंगें अनुप्रस्थ तरंगें हैं" यह कथन गलत है।

- **अन्य विकल्प:**

- अनुप्रस्थ तरंगें, जैसे जल तरंगें, तरंग की दिशा के लंबवत गति करती हैं।
- अनुदैर्ध्य तरंगें, जैसे ध्वनि तरंगें, तरंग की दिशा के समानांतर गति करती हैं।
- प्रकाश तरंगें विद्युत चुंबकीय होती हैं और निर्वात में यात्रा कर सकती हैं, जो सही है।

89. (b)

जब दो वस्तुएँ कमरे के तापमान पर होती हैं, तो उनकी गर्माहट या ठंडापन इस पर निर्भर करता है कि वे आपकी त्वचा से ऊष्मा को कितनी कुशलता से दूर करती हैं।

- **धातु का ऊष्मा संवाहन:**

धातु लकड़ी की तुलना में ऊष्मा का बहुत बेहतर संवाहक होता है। जब आप धातु के चम्मच को छूते हैं, तो यह आपकी त्वचा से ऊष्मा को तेज़ी से खींचता है, जिससे यह ठंडा महसूस होता है। इसके विपरीत, लकड़ी, जो एक खराब संवाहक होती है, आपकी त्वचा से ऊष्मा को उतनी कुशलता से दूर नहीं करती, इसलिए यह गर्म महसूस होती है।

90. (c)

उपपरमाण्विक कणों का द्रव्यमान भिन्न होता है, जिसमें **इलेक्ट्रॉन** सबसे हल्का होता है, उसके बाद **प्रोटॉन** और **न्यूट्रॉन** होते हैं, और सबसे भारी **अल्फा कण** होता है।

• **बढ़ते हुए द्रव्यमान का क्रम:**

- **इलेक्ट्रॉन** सबसे हल्का कण है।
- **प्रोटॉन** का द्रव्यमान इलेक्ट्रॉन से लगभग 1,836 गुना अधिक होता है।
- **न्यूट्रॉन** प्रोटॉन से थोड़ा अधिक भारी होता है।
- **अल्फा कण**, जिसमें 2 प्रोटॉन और 2 न्यूट्रॉन होते हैं, सबसे भारी होता है।

• **Electron** $\approx 9.11 \times 10^{-31}$ kg

• **Proton** $\approx 1.67 \times 10^{-27}$ kg

• **Neutron** $\approx 1.675 \times 10^{-27}$ kg

• **Alpha particle** $\approx 6.68 \times 10^{-27}$ kg

इस प्रकार बढ़ते हुए द्रव्यमान का क्रम है: **इलेक्ट्रॉन < प्रोटॉन < न्यूट्रॉन < अल्फा कण**

91. (b)

हाइड्रोलिक ब्रेक तरल के माध्यम से दबाव को संचारित करने के सिद्धांत का उपयोग करते हैं ताकि बल को लागू किया जा सके। हाइड्रोलिक प्रणालियों, जिसमें ब्रेक भी शामिल हैं, का मौलिक सिद्धांत **पास्कल का नियम** है।

• **पास्कल का नियम:**

पास्कल का नियम कहता है कि संलग्न तरल पर लगाए गए दबाव को सभी दिशाओं में समान रूप से संचारित किया जाता है। इस सिद्धांत के कारण हाइड्रोलिक ब्रेक में मास्टर सिलेंडर पर लगाया गया छोटा बल ब्रेक पैड्स पर बड़े बल के रूप में संचारित किया जा सकता है, जिससे वाहन को रोका जा सकता है।

• **अन्य विकल्प:**

- **बॉयल का नियम** गैसों के दबाव और आयतन के संबंध में है, जब तापमान स्थिर होता है।
- **बर्नोली का सिद्धांत** द्रव के वेग और दबाव के संबंध को समझाता है, जो मुख्य रूप से द्रव गतिकी में लागू होता है।
- **आर्किमिडीज का सिद्धांत** उछाल और तरल के विस्थापन से संबंधित है और हाइड्रोलिक प्रणालियों से असंबंधित है।

92. (c)

SI इकाइयाँ विभिन्न भौतिक मात्राओं के लिए मानकीकृत माप प्रदान करती हैं। प्रत्येक मात्रा का इंटरनेशनल सिस्टम ऑफ यूनिट्स में एक विशेष इकाई से संबंध होता है।

• **गलत मिलान – ऊर्जा और पास्कल:**

ऊर्जा की माप **जूल (J)** में होती है, न कि पास्कल। पास्कल दबाव की इकाई है। इसलिए, विकल्प (c) गलत मिलान है।

• **सही मिलान:**

- शक्ति की माप वाट (W) में होती है।
- बल की माप न्यूटन (N) में होती है।
- विद्युत धारा की माप एम्पियर (a) में होती है।

93. (c)

न्यूट्रॉन एक उप-परमाण्विक कण है जिसमें कोई विद्युत आवेश नहीं होता है और यह परमाणु के नाभिक में स्थित होता है। इसकी खोज परमाणु संरचना की समझ को बढ़ाने में महत्वपूर्ण थी।

- **न्यूट्रॉन की खोज – जेम्स चैडविक:**
जेम्स चैडविक ने 1932 में न्यूट्रॉन की खोज की थी। इस खोज ने परमाणु द्रव्यमान में विसंगतियों को समझाने में मदद की और परमाणु भौतिकी और परमाणु मॉडल में प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।
- **अन्य वैज्ञानिक:**
 - जे. जे. थॉमसन ने इलेक्ट्रॉन की खोज की थी।
 - अर्नेस्ट रदरफोर्ड ने प्रोटॉन की खोज की और परमाणु का नाभिकीय मॉडल विकसित किया।
 - नील्स बोहर ने परमाणु मॉडल में योगदान दिया, विशेष रूप से नाभिक के चारों ओर इलेक्ट्रॉनों की कक्षाओं की संरचना में।

94. (c)

आवर्त सारणी तत्वों को उनकी **परमाणु संख्या, इलेक्ट्रॉन विन्यास**, और आवर्ती रासायनिक गुणों के आधार पर व्यवस्थित करती है। यह संगठन तत्वों के गुणों की भविष्यवाणी में सहायक होता है।

- **गलत कथन – धातुएँ दाईं ओर:** धातुएँ वास्तव में आवर्त सारणी के बाईं ओर और मध्य में स्थित होती हैं, मुख्यतः समूह 1 और 2 तथा संक्रमण धातुओं के खंड में। **अधातुएँ**, जिनमें नोबल गैसों भी शामिल हैं, आवर्त सारणी के दाईं ओर स्थित होती हैं। इसलिए, विकल्प (c) गलत है।

95. (a)

तत्वों के रासायनिक और भौतिक गुणों, जैसे अभिक्रियाशीलता, स्थिरता, और निष्क्रियता, के आधार पर उनके विशिष्ट औद्योगिक अनुप्रयोग होते हैं।

- **सही मिलान:**
 - **हीलियम:** यह एक अ-ज्वलनशील गैस है, जिसका उपयोग **गैस गुब्बारों** और विभिन्न अनुप्रयोगों में **शीतलन** के लिए किया जाता है।
 - **क्लोरीन:** यह **जल शुद्धिकरण** में उपयोग होता है क्योंकि इसमें कीटाणुनाशक गुण होते हैं।
 - **सल्फर:** H_2SO_4 (सल्फ्यूरिक अम्ल) के उत्पादन में प्रमुख घटक है, जो उद्योग में व्यापक रूप से प्रयोग होता है।
 - **आर्गन:** यह एक निष्क्रिय गैस है और **वेल्डिंग** में ऑक्सीकरण को रोकने के लिए उपयोग की जाती है।

इस प्रकार, विकल्प (a) सही है।

96. (a)

एंटासिड वे यौगिक होते हैं जो पेट के अम्ल (हाइड्रोक्लोरिक अम्ल) को न्यूट्रल कर अपच और सीने में जलन जैसे लक्षणों से राहत प्रदान करते हैं। ये सामान्यतः क्षारीय प्रकृति के होते हैं।

- **सोडियम बाइकार्बोनेट – सामान्य एंटासिड:**
सोडियम बाइकार्बोनेट ($NaHCO_3$) एक हल्का क्षार है जो पेट के अम्ल (HCl) के साथ अभिक्रिया कर नमक, पानी और कार्बन डाइऑक्साइड बनाता है, जिससे अम्ल को न्यूट्रल करने में मदद मिलती है और असुविधा से राहत मिलती है।
- **अन्य विकल्प:**
 - **कैल्शियम क्लोराइड** एक एंटासिड नहीं है; इसका उपयोग डी-आइसिंग और खाद्य योजक के रूप में होता है।
 - **अमोनियम नाइट्रेट** उर्वरक और विस्फोटकों में उपयोग होता है।
 - **पोटेशियम परमैंगनेट** एक ऑक्सीकारक और कीटाणुनाशक है।

97. (b)

हाइड्रोजनीकरण एक रासायनिक प्रक्रिया है जो खाद्य उद्योग में वनस्पति तेलों को अर्ध-ठोस या ठोस वसा, जैसे कि मार्जरीन और शॉर्टनिंग में परिवर्तित करने के लिए प्रयोग की जाती है। इस प्रक्रिया में हाइड्रोजन परमाणुओं को जोड़कर वसा की संतृप्ति बढ़ाई जाती है और उसे ठोस किया जाता है।

- **हाइड्रोजनीकरण:**
हाइड्रोजनीकरण में वनस्पति तेलों में असंतृप्त वसा में हाइड्रोजन जोड़ना शामिल होता है, जो वसा को ठोस बनाता है और उत्पाद की शेल्फ लाइफ और स्थिरता को बढ़ाता है।

- **अन्य विकल्प:**

- **किण्वन** एक जैविक प्रक्रिया है जिसमें सूक्ष्मजीव शर्करा को अल्कोहल या अम्लों में परिवर्तित करते हैं।
- **डीहाइड्रोजनीकरण** हाइड्रोजन को हटाने की प्रक्रिया है, जो हाइड्रोजनीकरण के विपरीत है।
- **ऑक्सीकरण** एक प्रतिक्रिया है जिसमें किसी पदार्थ के इलेक्ट्रॉन खो जाते हैं, लेकिन यह ठोस वसा के निर्माण से संबंधित नहीं है।

98. (b)

प्रोजेक्ट टाइगर 1973 में भारत सरकार द्वारा बाघों की तेजी से घटती आबादी को रोकने के उद्देश्य से शुरू किया गया था।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य बंगाल बाघों की रक्षा करना था, इसके लिए उनके प्राकृतिक आवासों का संरक्षण और बाघों की आबादी के पुनर्स्थापन के लिए अभयारण्य स्थापित किए गए। शुरुआत में देश के विभिन्न हिस्सों में नौ बाघ अभयारण्यों के साथ शुरू हुआ यह कार्यक्रम अब 50 से अधिक अभयारण्यों तक विस्तारित हो चुका है, जो प्रमुख बाघ आवास क्षेत्रों को कवर करता है।

इसने बाघ संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और वैज्ञानिक वन्यजीव प्रबंधन के लिए एक ढांचा स्थापित किया है, जिसमें आवास संरक्षण, सख्त गश्त, और बाघों की निगरानी शामिल है। प्रोजेक्ट टाइगर दुनिया के सबसे प्रसिद्ध वन्यजीव संरक्षण कार्यक्रमों में से एक बना हुआ है, जो बाघों के पारिस्थितिक महत्व को एक शीर्ष शिकारी के रूप में और वन पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य को बनाए रखने में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

99. (c)

पारिस्थितिकी संबंध पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न प्रजातियों के बीच होने वाली अंतःक्रियाओं का वर्णन करते हैं, जिसमें कुछ संबंधों में दोनों प्रजातियों को लाभ होता है, जबकि अन्य में एक प्रजाति को नुकसान होता है।

- **गलत मिलान – परजीविता:**

परजीविता (Parasitism) एक ऐसा संबंध है जिसमें एक प्रजाति (परजीवी) को लाभ होता है, जबकि दूसरी प्रजाति (आतिथि) को नुकसान होता है। इसलिए, "परजीविता – दोनों प्रजातियों को लाभ होता है" गलत है।

- **अन्य विकल्प:**

- **परस्परता (Mutualism)** में दोनों प्रजातियों को लाभ होता है।
- **सहभोजिता (Commensalism)** में एक प्रजाति को लाभ होता है, जबकि दूसरी अप्रभावित रहती है।
- **अमेन्सलिज्म (Amensalism)** में एक प्रजाति को नुकसान होता है, जबकि दूसरी अप्रभावित रहती है।

100. (c)

पारिस्थितिक टिपिंग बिंदु एक महत्वपूर्ण सीमा को संदर्भित करता है जिस पर एक पारिस्थितिकी तंत्र अपरिवर्तनीय परिवर्तनों का अनुभव करता है, अक्सर पर्यावरणीय तनाव के कारण, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना या कार्य में स्थायी परिवर्तन होता है।

- **पारिस्थितिक टिपिंग बिंदु:**

जब एक पारिस्थितिकी तंत्र को होने वाली क्षति अपरिवर्तनीय हो जाती है, तो पारिस्थितिकी तंत्र के कार्यों का पतन या जैव विविधता का नुकसान हो सकता है। यह प्रदूषण, वनों की कटाई, या जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों के कारण होता है।

- **अन्य विकल्प:**

- **महत्वपूर्ण सीमा** एक सामान्य शब्द है और अपरिवर्तनीयता को इंगित नहीं कर सकता।
- **वहन क्षमता** उस अधिकतम जनसंख्या आकार को संदर्भित करती है जिसे एक पारिस्थितिकी तंत्र स्थायी रूप से समर्थन कर सकता है।
- **वापसी का बिंदु (Point of no return)** एक व्यापक शब्द है और विशेष रूप से पारिस्थितिक तंत्रों के लिए नहीं होता।

101. (a)

पटना कलम एक विशिष्ट चित्रकला शैली है जो बिहार के पटना क्षेत्र में विकसित हुई। यह मुगल कला से प्रभावित थी, लेकिन इसमें स्थानीय संस्कृति और दैनिक जीवन के दृश्यों को प्रमुखता दी गई।

- **सही कथन:**

- **कथन 1:** पटना कलम पर मुगल लघु चित्रकला का प्रभाव था, जिसमें सूक्ष्म विवरण और सौंदर्य को अपनाया गया था।
- **कथन 2:** इस शैली में दैनिक जीवन के दृश्यों जैसे बाज़ार, त्योहार और स्थानीय रीति-रिवाजों पर ध्यान दिया गया है, जो इसे मुगल कला के औपचारिक विषयों से अलग बनाता है।

- **गलत कथन:**

- **कथन 3:** पटना कलम 18वीं और 19वीं शताब्दी में, मुगल काल के अंतिम समय के दौरान प्रमुखता में आई, न कि दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में।

102. (a)

बिहार भारत के कुछ प्राचीनतम और सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों का घर था, जो दर्शन, विज्ञान, और धर्म के ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

- **स्थापना का क्रम:**

- **नालंदा विश्वविद्यालय:** 5वीं शताब्दी में स्थापित, यह सबसे प्रारंभिक और प्रमुख शिक्षा केंद्रों में से एक था।
- **ओदंतपुरी विश्वविद्यालय:** 8वीं शताब्दी में स्थापित, यह क्षेत्र का एक अन्य महत्वपूर्ण शैक्षिक संस्थान था।
- **विक्रमशिला विश्वविद्यालय:** 8वीं-9वीं शताब्दी में पाल राजाओं द्वारा स्थापित, यह तांत्रिक बौद्ध धर्म के विशेष अध्ययन के लिए प्रसिद्ध था।
- **मिथिला विश्वविद्यालय:** बाद में स्थापित, यह विश्वविद्यालय कानून और दर्शन में विशेष रूप से शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना।

इस प्रकार, सही क्रम 1, 3, 2, 4 है, जिससे विकल्प (a) सही है।

103. (d)

जयप्रकाश नारायण एक प्रमुख भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और राजनीतिक विचारक थे, जिन्होंने सर्वोदय (सभी का कल्याण) और समाजवाद का समर्थन किया। उन्होंने एक न्यायपूर्ण और समान समाज के अपने विचारों को दर्शाने वाले कई कार्यों को लिखा।

- **व्हाय सोशलिज्म:**

"व्हाय सोशलिज्म?" में जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद के प्रति अपने दृष्टिकोण को एक न्यायपूर्ण और समान समाज की दिशा में एक मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया। यह पुस्तक असमानताओं को समाप्त करने और कल्याण को बढ़ावा देने पर उनके विचारों को संक्षेप में प्रस्तुत करती है।

- **अन्य विकल्प:**

- **इंडिया डिवाइडेड** डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा लिखी गई थी।
- **प्रिजन डायरी** जयप्रकाश नारायण द्वारा लिखी गई थी, लेकिन यह मुख्य रूप से सर्वोदय और समाजवाद पर केंद्रित नहीं है।
- **टूवर्ड्स स्ट्रगल** जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक दर्शन पर आधारित कोई मान्यता प्राप्त कार्य नहीं है।

104. (a)

भिखारी ठाकुर एक प्रसिद्ध नाटककार, कवि, और अभिनेता थे, जो भोजपुरी साहित्य और संस्कृति में अपने योगदान के लिए विख्यात हैं। उनकी रचनाएँ आमतौर पर भोजपुरी-भाषी समुदाय द्वारा सामना किए गए सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित थीं।

- **सही कथन:**

- **कथन 1:** भिखारी ठाकुर को उनके भोजपुरी रंगमंच और साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के कारण "भोजपुरी के शेक्सपीयर" के रूप में जाना जाता है।
- **कथन 2:** उनका सबसे प्रसिद्ध नाटक "बिदेसिया" प्रवास के विषय और इसके भोजपुरिया समाज पर सामाजिक प्रभाव को दर्शाता है, जिसमें प्रवास के कारण परिवारों के बीच भावनात्मक संघर्ष को उजागर किया गया है।
- **गलत कथन:**
 - **कथन 3:** भिखारी ठाकुर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेता नहीं थे; उनका प्रभाव सांस्कृतिक था, न कि राजनीतिक।

105. (a)

1873-74 के बिहार अकाल ने भारत में व्यवस्थित अकाल राहत और रोकथाम नीतियों की आवश्यकता को उजागर किया, जिससे ब्रिटिश सरकार ने भविष्य में ऐसी समस्याओं को रोकने के लिए कदम उठाए।

● **अकाल आयोग का गठन:**

बिहार अकाल ने ब्रिटिश सरकार को अकाल के कारणों का अध्ययन करने और राहत नीतियों की सिफारिश करने के लिए अकाल आयोग स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। यह भोजन की कमी का प्रबंधन करने और अकाल के समय राहत प्रदान करने के लिए एक संगठित दृष्टिकोण विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

106. (c)

नालंदा विश्वविद्यालय, जो बिहार में स्थित था, प्रारंभिक आवासीय विश्वविद्यालयों में से एक था और पूरे एशिया के छात्रों को आकर्षित करता था। गुप्त राजवंश ने विश्वविद्यालय का व्यापक समर्थन किया और इसे एक शैक्षणिक केंद्र के रूप में बढ़ावा दिया।

● **स्थापना और कारण का विश्लेषण:**

- **पना (a)** सही है क्योंकि नालंदा विश्वविद्यालय को गुप्त संरक्षण के कारण एक प्रसिद्ध शैक्षिक केंद्र के रूप में पहचान मिली।
- **कारण (R)** गलत है क्योंकि गुप्त शासक मुख्य रूप से हिंदू धर्म के अनुयायी थे, न कि बौद्ध धर्म के। हालांकि उन्होंने नालंदा जैसे बौद्ध संस्थानों को सहिष्णुता और समर्थन दिया, लेकिन उनका धार्मिक झुकाव नालंदा के समर्थन का मुख्य कारण नहीं था।

इसलिए, विकल्प (c) सही है।

107. (b)

अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना किसानों के अधिकारों और शिकायतों को संबोधित करने के लिए की गई थी और यह भारत के कृषक आंदोलन में एक प्रमुख संगठन बन गया।

● **अखिल भारतीय किसान सभा का गठन वर्ष:**

स्वामी सहजानंद सरस्वती ने 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना की ताकि किसानों को उनके अधिकारों के लिए संगठित किया जा सके, जिसमें भूमि सुधार, उचित मजदूरी और ऋण मुक्ति जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

इस प्रकार, विकल्प (b) सही है।

108. (a)

शिशुनाग वंश प्राचीन भारत में मगध पर शासन करने वाले प्रारंभिक वंशों में से एक था, जो बाद में मौर्य वंश के तहत एक शक्तिशाली साम्राज्य बना।

● **सही कथन:**

- **कथन 1:** शिशुनाग वंश ने वास्तव में मगध में हर्यक वंश के बाद शासन किया।
- **कथन 2** गलत है, क्योंकि राजधानी को वैशाली में स्थानांतरित नहीं किया गया था; इसके बजाय, इस अवधि के अधिकांश समय में राजधानी पाटलिपुत्र में रही।

इसलिए, केवल कथन 1 सही है।

109. (a)

प्राचीन बिहार (मगध क्षेत्र) में एक के बाद एक वंशों ने सत्ता प्राप्त की, जिसमें प्रत्येक ने मगध साम्राज्य के विस्तार और सुदृढीकरण में योगदान दिया।

• **सही क्रम:**

- **हर्यक वंश** सबसे प्रारंभिक था, इसके बाद **शिशुनाग वंश** ने सत्ता संभाली।
 - **नंद वंश** ने इसके बाद शासन किया, जो अपनी संपत्ति और केंद्रीकृत प्रशासन के लिए जाना जाता है।
 - अंत में, **मौर्य वंश** का उदय हुआ, जिसने चंद्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।
- इसलिए, सही क्रम है **हर्यक → शिशुनाग → नंद → मौर्य**।

110. (d)

गांधी मैदान, पटना में, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजनीतिक सभाओं और आयोजनों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसे महात्मा गांधी के योगदान और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के सम्मान में उनके निधन के बाद **1948 में** गांधी मैदान नाम दिया गया।

111. (b)

बिहार के विभाजन के बाद, 2000 में झारखंड राज्य का गठन हुआ, जिसके बाद दोनों राज्यों ने शुरू में एक ही राज्यपाल को साझा किया। विनोद चंद्र पांडे ने बिहार और झारखंड दोनों के अंतिम सामान्य राज्यपाल के रूप में सेवा की, जब तक कि झारखंड ने 2002 में अपना राज्यपाल नियुक्त नहीं किया।

112. (a)

नमक सत्याग्रह 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसमें विभिन्न नेताओं ने ब्रिटिश नमक एकाधिकार के विरोध में भारत भर में पहल की। महादेव लाल सराफ ने भागलपुर में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया, लोगों को ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ संगठित किया और आत्मनिर्भरता और प्रतिरोध के पक्ष में जनसमर्थन जुटाया।

113. (a)

बिहार, जो अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है, कई महत्वपूर्ण मंदिरों और स्मारकों का घर है, जिनका अपना अनोखा ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व है।

- **विराट रामायण मंदिर:** पूर्वी चंपारण जिले में निर्माणाधीन, विराट रामायण मंदिर के दुनिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर बनने की उम्मीद है। यह मंदिर कंबोडिया के अंकोर वाट की स्थापत्य भव्यता से प्रेरित है। 270 फीट ऊंचा और 3.76 लाख वर्ग फीट में फैला यह मंदिर परिसर 12 गुंबदों से युक्त होगा, जिनमें से सबसे ऊंचा 270 फीट का होगा, और विभिन्न देवी-देवताओं को समर्पित 22 गर्भगृहों को समेटे होगा। इसका निर्माण कार्य 20 जून, 2023 को शुरू हुआ था और इसके 2025 के अंत तक पूरा होने की उम्मीद है।
- **जानकी जन्मस्थली मंदिर:** पुनौराधाम, सीतामढ़ी जिले में स्थित, जानकी जन्मस्थली मंदिर देवी सीता के जन्मस्थान के रूप में पूजनीय है। मान्यता के अनुसार, राजा जनक ने गंभीर अकाल के दौरान खेतों की जुताई करते समय एक मटके में नवजात सीता को खोजा था। इस मंदिर परिसर में जानकी कुंड भी है, जो एक पवित्र तालाब है, और भक्तों का मानना है कि इसमें स्नान करने से संतान प्राप्ति का आशीर्वाद मिलता है। इसकी सांस्कृतिक और धार्मिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए, बिहार सरकार ने सितंबर 2023 में पुनौरा धाम जानकी मंदिर के विकास के लिए ₹72.47 करोड़ की राशि स्वीकृत की।
- **बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय और स्मारक स्तूप:** वैशाली जिले में स्थित, बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय और स्मारक स्तूप क्षेत्र की समृद्ध बौद्ध विरासत को समर्पित हैं। वैशाली का ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि यहीं पर भगवान बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश दिया था और अपने महापरिनिर्वाण की घोषणा की थी। यह संग्रहालय और स्तूप बौद्ध धर्म से संबंधित कलाकृतियों और शिक्षाओं को संरक्षित और प्रदर्शित करने का उद्देश्य रखते हैं, जो भक्तों और विद्वानों के लिए एक सीखने और चिंतन का केंद्र बनाते हैं।

- लाल केश्वर शिव मंदिर: हाजीपुर, वैशाली जिले में स्थित यह प्रमुख मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है, विशेष रूप से महाशिवरात्रि जैसे त्योहारों के दौरान, जो विभिन्न क्षेत्रों से भक्तों को आकर्षित करता है। मंदिर की वास्तुकला पारंपरिक डिजाइनों को दर्शाती है और यह स्थानीय धार्मिक प्रथाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

ये स्थल बिहार के विविध धार्मिक परिदृश्य और राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को उजागर करते हैं।

114. (a)

बिहार का पहला ड्राई पोर्ट और इनलैंड कंटेनर डिपो (ICD) का उद्घाटन पटना के निकट बिहटा में 21 अक्टूबर 2024 को हुआ। इस सुविधा का उद्देश्य राज्य की लॉजिस्टिक्स और निर्यात क्षमता को बढ़ाना है, जिसमें गोदाम, कस्टम सेवाएं और बहु-प्रणाली परिवहन विकल्प शामिल हैं। ICD बिहटा को रेल द्वारा कोलकाता, हल्दिया, विशाखापट्टनम और मुंद्रा जैसे प्रमुख बंदरगाहों से जोड़ा गया है, जिससे माल की कुशल आवाजाही सुनिश्चित होती है। यह विकास बिहार के व्यापारिक मात्रा को बढ़ावा देगा और राज्य की आर्थिक वृद्धि में योगदान देगा।

115. (b)

भारत वन स्थिति रिपोर्ट (ISFR) 2021 के अनुसार, बिहार का वन क्षेत्र 7,381 वर्ग किलोमीटर है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 7.84% है।

वन क्षेत्र का वर्गीकरण:

- बहुत सघन वन (VDF): 145.30 वर्ग किमी (0.15% राज्य का क्षेत्र)
- मध्यम सघन वन (MDF): 3,255.66 वर्ग किमी (3.46%)
- खुला वन (OF): 3,980.83 वर्ग किमी (4.23%)

वृक्ष आवरण:

- वृक्ष आवरण: 2,341 वर्ग किमी, जो बिहार के भौगोलिक क्षेत्र का 2.49% है।

कुल वन और वृक्ष आवरण:

- 9,721.79 वर्ग किमी, जो राज्य के क्षेत्र का 10.3% है।

जिला-वार वन आवरण:

- कैमूर जिले में सबसे बड़ा वन क्षेत्र है, जो 1,051.56 वर्ग किमी है।

ISFR 2019 से परिवर्तन:

- वन आवरण में 75.79 वर्ग किमी की वृद्धि।
- वृक्ष आवरण में 338 वर्ग किमी की वृद्धि, जो पिछले आकलन से 16.87% अधिक है।

वनों के बाहर वृक्षों का विस्तार (TOF):

- 4,891 वर्ग किमी।

ये आंकड़े बिहार के पर्यावरणीय स्थिरता और जैव विविधता संरक्षण को बढ़ाने के लिए राज्य के निरंतर प्रयासों को दर्शाते हैं।

116. (c)

भोजपुर क्षेत्र को इसकी उच्च कृषि उत्पादकता के कारण अक्सर "बिहार का अनाज भंडार" कहा जाता है। इस क्षेत्र में भोजपुर, बक्सर, कैमूर, और रोहतास जैसे जिले आते हैं, जो उपजाऊ जलोढ़ मैदानों और अनुकूल जलवायु से लाभान्वित होते हैं। ये स्थितियाँ इस क्षेत्र को धान और गेहूं जैसे फसलों की खेती के लिए आदर्श बनाती हैं। इन मुख्य फसलों की प्रचुरता ने इस क्षेत्र को यह कृषि उपाधि दिलाई है।

117. (c)

बिहार आर्थिक सर्वेक्षण पहली बार वित्तीय वर्ष 2006-07 के लिए प्रकाशित किया गया था, जो राज्य की वित्तीय पारदर्शिता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के मुख्य बिंदु:

- **सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP):** 2023-24 के लिए नाममात्र GSDP ₹8.59 लाख करोड़ अनुमानित है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 8.9% की वृद्धि को दर्शाता है।
- **प्रति व्यक्ति आय:** 2022-23 के लिए स्थिर कीमतों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (NSDP) ₹31,280 होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 9.1% की वृद्धि को दर्शाता है।
- **क्षेत्रीय संरचना (Sectoral Composition):** 2022-23 में सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) का क्षेत्रीय वितरण इस प्रकार है:
 - प्राथमिक क्षेत्र: 19.97%
 - द्वितीयक क्षेत्र: 20.04%
 - तृतीयक क्षेत्र: 59.98%
 - राजकोषीय संकेतक (Fiscal Indicators):

2023-24 के लिए राजकोषीय घाटा GSDP का 3% (₹25,568 करोड़) लक्षित है, जो केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित सीमा के अनुरूप है।

- **राज्य का कर्ज और अन्य देनदारियां:**
2023-24 में राज्य का कुल कर्ज और अन्य देनदारियां ₹3,24,762 करोड़ अनुमानित हैं, जो GSDP का 37.81% है, जबकि 2022-23 में यह 38.66% थी।
- **पूंजीगत व्यय (Capital Expenditure):**
2023-24 के लिए पूंजीगत व्यय ₹29,257 करोड़ प्रस्तावित है, जो 2022-23 के संशोधित अनुमान से 26% कम है।
- **बेरोजगारी:**
जुलाई 2021-जून 2022 की आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) के अनुसार बिहार की बेरोजगारी दर 6% थी, जो राष्ट्रीय औसत 4.1% से अधिक है।
- **विकास पहल (Development Initiatives):**
राज्य बिहार मिलेट मिशन, बिहार दलहन और तिलहन विकास मिशन, और फसल विविधीकरण मिशन जैसे मिशनों को कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए शुरू करने की योजना बना रहा है।

118. (c)

बिहार का भारत में पाइराइट के उत्पादन पर लगभग एकाधिकार है, जहां देश के लगभग 95% पाइराइट संसाधन पाए जाते हैं। इसके प्रमुख भंडार रोहतास जिले में, विशेष रूप से सोन घाटी के अमझोर क्षेत्र में स्थित हैं। ये भंडार विन्ध्यन चट्टान प्रणाली से संबंधित हैं और अपने उच्च सल्फर सामग्री के कारण महत्वपूर्ण हैं, जो इन्हें सल्फ्यूरिक एसिड के उत्पादन के लिए मूल्यवान बनाता है।

119. (d)

2011 की जनगणना के अनुसार, बिहार के गोपालगंज जिले में राज्य में सबसे उच्च लिंगानुपात दर्ज किया गया, जिसमें 1,021 महिलाएँ प्रति 1,000 पुरुषों पर थीं।

बिहार की जनसांख्यिकी प्रोफाइल (2011 जनगणना):

- जनसंख्या और घनत्व:
- कुल जनसंख्या: 10,40,99,452
- पुरुष: 5,42,78,157
- महिलाएँ: 4,98,21,295
- जनसंख्या घनत्व: 1,106 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर, जिससे बिहार भारत का सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य बनता है।
- लिंगानुपात:
- कुल लिंगानुपात: 918 महिलाएँ प्रति 1,000 पुरुष।
- उच्चतम जिला लिंगानुपात: गोपालगंज जिले में 1,015 महिलाएँ प्रति 1,000 पुरुष।

- साक्षरता दर:
- कुल साक्षरता दर: 61.8%
- पुरुष साक्षरता: 71.2%
- महिला साक्षरता: 51.5%
- राष्ट्रीय औसत 72.98% से नीचे रहने के बावजूद, बिहार की साक्षरता दर में सुधार हुआ है।
- शहरीकरण:
- शहरी जनसंख्या: कुल जनसंख्या का लगभग 11.3%, जो एक प्रमुख रूप से ग्रामीण जनसांख्यिकी का संकेत देता है।
- धार्मिक संरचना:
- हिंदू: 82.7%
- मुस्लिम: 16.9%
- अन्य धर्म: 0.4%
- आयु वितरण:
- बिहार की जनसंख्या का लगभग 58% हिस्सा 25 वर्ष से कम आयु का है, जो एक युवा जनसांख्यिकी को दर्शाता है।

120. (d)

8 सितंबर, 2023 को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गया जी धाम धर्मशाला का शिलान्यास गया में किया। यह धर्मशाला भारत की सबसे बड़ी धर्मशालाओं में से एक होगी, जिसमें 1,080 बिस्तरों की सुविधा होगी और इसका निर्माण लागत लगभग ₹120 करोड़ है। इस परियोजना का उद्देश्य विष्णुपद मंदिर और गया के अन्य पवित्र स्थलों पर आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए आरामदायक आवास प्रदान करना है।

121. (b)

167 फीट ऊँची भगवान शिव की प्रतिमा का निर्माण हाजीपुर, बिहार के सरसई सरोवर में किया जा रहा है। यह महत्वपूर्ण परियोजना इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्ता को बढ़ाने का उद्देश्य रखती है, जिससे भक्तों और पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके। इसके पूरा होने पर, यह भारत में भगवान शिव की सबसे ऊँची प्रतिमाओं में से एक होगी, जो इस देवता से जुड़े समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और भक्ति का प्रतीक होगी।

122. (c)

भागलपुर, बिहार में प्रस्तावित पीरपैती थर्मल पावर प्रोजेक्ट की उत्पादन क्षमता 2,400 मेगावाट (MW) स्वीकृत की गई है। यह कोयला-आधारित पावर प्लांट तीन इकाइयों से मिलकर बनेगा, जिनमें से प्रत्येक 800 MW का उत्पादन करेगी, जिससे कुल क्षमता 2,400 MW होगी। इस परियोजना में बिहार स्टेट पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड (BSPGCL) और NHPC लिमिटेड की साझेदारी है, जिसमें इक्विटी वितरण क्रमशः 26% और 74% है। पावर प्लांट की स्थापना की अनुमानित लागत लगभग ₹21,400 करोड़ है। बिहार सरकार ने इस परियोजना के लिए लगभग ₹2,000 करोड़ मूल्य की 1,020.60 एकड़ भूमि का अधिग्रहण पहले ही कर लिया है। इस पहल का उद्देश्य बिहार की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाना और राज्य की बढ़ती बिजली मांगों को पूरा करना है।

123. (d)

- अमृत लाल मीना को बिहार का नया मुख्य सचिव नियुक्त किया गया है: यह कथन सही है। 1989 बैच के आईएएस अधिकारी अमृत लाल मीना को अगस्त 2024 में बिहार का मुख्य सचिव नियुक्त किया गया।
- आलोक राज को बिहार का पुलिस महानिदेशक (DGP) नियुक्त किया गया है: यह कथन सही है। 1989 बैच के आईपीएस अधिकारी आलोक राज को अगस्त 2024 में बिहार का पुलिस महानिदेशक नियुक्त किया गया।
- न्यायमूर्ति श्याम किशोर शर्मा वर्तमान में बिहार लोकायुक्त के अध्यक्ष हैं: यह कथन सही है। न्यायमूर्ति श्याम किशोर शर्मा 2020 से बिहार लोकायुक्त के अध्यक्ष के रूप में सेवा दे रहे हैं।

(d) अशुतोष कुमार वर्तमान में बिहार उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश हैं: यह कथन गलत है। नवंबर 2024 तक, पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन हैं। न्यायमूर्ति अशुतोष कुमार पटना उच्च न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश हैं लेकिन मुख्य न्यायाधीश नहीं।

124. (a)

मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना बिहार सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य राज्य में महिलाओं के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देना है। इस योजना के तहत, महिला उद्यमियों को अपने व्यवसाय स्थापित करने के लिए कुल ₹10 लाख की वित्तीय सहायता दी जाती है, जिसमें ₹5 लाख का ब्याज-मुक्त ऋण और ₹5 लाख की अनुदान राशि शामिल है। यह ऋण वितरण के एक वर्ष बाद से 84 समान मासिक किस्तों में चुकाना होता है। इस योजना का उद्देश्य महिलाओं को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाना है ताकि वे अपने व्यवसाय को शुरू और बनाए रख सकें।

125. (d)

बिहार सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024 को श्री विजय कुमार चौधरी द्वारा प्रस्तुत किया गया था, न कि श्री सम्राट चौधरी द्वारा।

इस अधिनियम के तहत अपराधों की जांच के संबंध में यह निर्धारित किया गया है कि जांच अधिकारी का पद **उपाधीक्षक (डीएसपी)** से नीचे नहीं होना चाहिए, न कि इंस्पेक्टर।

इसलिए, दोनों कथन गलत हैं।

अधिनियम के प्रावधान:

- **संज्ञेय और गैर-जमानती अपराध:** इस अधिनियम के तहत सभी अपराधों को संज्ञेय और गैर-जमानती के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिससे कानून प्रवर्तन एजेंसियों को बिना वारंट गिरफ्तारी की अनुमति मिलती है और आरोपियों को जमानत का अधिकार नहीं मिलता।
- **परिभाषित अपराध:** अधिनियम में विभिन्न प्रकार के अनुचित साधनों का विवरण दिया गया है, जिनमें शामिल हैं:
 - प्रश्न पत्र का लीक होना
 - फर्जी वेबसाइटों का निर्माण और उपयोग
 - सेवा प्रदाताओं के साथ मिलीभगत
- **व्यक्तिगत दंड:** ऐसे अपराधों के दोषी पाए गए व्यक्तियों को निम्नलिखित दंड का सामना करना पड़ सकता है:
 - तीन से पांच साल तक का कारावास
 - ₹10 लाख तक का जुर्माना
- **सेवा प्रदाताओं के लिए दंड:** ऐसे सेवा प्रदाता, चाहे सरकारी हों या निजी, जो अनुचित साधनों में संलिप्त पाए जाएं, उनके लिए निम्नलिखित दंड निर्धारित हैं:
 - ₹1 करोड़ तक का जुर्माना
 - परीक्षा से संबंधित सेवाएं प्रदान करने पर चार साल का प्रतिबंध

126. (b)

मान लें कि व्यक्ति की कुल आय ₹X है।

वह अपनी आय का 40% किराए पर, 20% भोजन पर, और 15% अन्य खर्चों पर खर्च करता है।

आय का कुल खर्च = 40% + 20% + 15% = 75%

अतः व्यक्ति अपनी आय का 100% - 75% = 25% बचाता है।

चूंकि 25% का मूल्य ₹12,000 है, तो समीकरण बनता है:

$$0.25X = 12000$$

$$X = 12000 \div 0.25 = 48000$$

सही उत्तर: (b) ₹48,000

127. (a)

रवि के दादा का इकलौता बेटा रवि का पिता है।
 रवि के पिता की बेटी, रवि की बहन होगी।
 अतः तस्वीर में दिख रही लड़की रवि की बहन है।

128. (b)

5 कर्मचारियों का औसत वेतन ₹24,000 है।
 5 कर्मचारियों का कुल वेतन = औसत वेतन × कर्मचारियों की संख्या
 कुल वेतन = $24,000 \times 5 = 1,20,000$
 जब एक नया कर्मचारी शामिल होता है, तो औसत वेतन ₹2,000 घटकर ₹22,000 हो जाता है।
 6 कर्मचारियों के लिए नया औसत वेतन = ₹22,000
 6 कर्मचारियों का कुल वेतन = $22,000 \times 6 = 1,32,000$
 नए कर्मचारी का वेतन = 6 कर्मचारियों का कुल वेतन - 5 कर्मचारियों का कुल वेतन
 नए कर्मचारी का वेतन = $1,32,000 - 1,20,000 = 12,000$
 सही उत्तर: **(b)** ₹12,000

129. (a)

प्रत्येक वस्तु की क्रय मूल्य (CP) ज्ञात करें:

व्यक्ति दो वस्तुएँ ₹500 में खरीदता है।

दोनों वस्तुओं का कुल क्रय मूल्य (CP):

कुल CP = $500 + 500 = 1,000$

प्रत्येक वस्तु का विक्रय मूल्य (SP) ज्ञात करें:

• पहली वस्तु को 20% लाभ पर बेचा गया:

पहली वस्तु का SP = $500 + (20\% \text{ का } 500) = 600$

• दूसरी वस्तु को 10% हानि पर बेचा गया:

दूसरी वस्तु का SP = $500 - (10\% \text{ का } 500) = 450$

दोनों वस्तुओं का कुल विक्रय मूल्य (SP):

कुल SP = $600 + 450 = 1,050$

कुल लाभ की गणना करें:

लाभ = कुल SP - कुल CP

लाभ = $1,050 - 1,000 = 50$

कुल लाभ प्रतिशत:

लाभ प्रतिशत = $\frac{\text{लाभ}}{\text{कुल CP}} \times 100 = \frac{50}{1,000} \times 100 = 5\%$

सही उत्तर: व्यक्ति का कुल लाभ प्रतिशत 5% है।

130. (a)

मान लें कि प्रारंभिक राशि (P) है।

दिया गया है कि यह राशि 5 वर्षों में दोगुनी हो जाती है।

यदि प्रारंभिक राशि P है, तो 5 वर्षों के बाद यह 2P हो जाएगी।

संयोजित ब्याज की दर को ध्यान में रखते हुए, जब एक राशि निश्चित अवधि में दोगुनी होती है, तो समान दर पर दूसरी समान अवधि में यह फिर से दोगुनी हो जाएगी।

चार गुना बनने के लिए समय की गणना:

चूँकि राशि 5 वर्षों में दोगुनी हो जाती है, अतः अगले 5 वर्षों में यह फिर से दोगुनी होकर 4P हो जाएगी।

इसलिए, कुल समय = 5 वर्ष + 5 वर्ष = 10 वर्ष।
सही उत्तर: राशि 10 वर्षों में चार गुना हो जाएगी।

131. (a)

प्रारंभिक मात्राएँ निर्धारित करें: मान लेते हैं कि दूध की प्रारंभिक मात्रा $4x$ लीटर और पानी की प्रारंभिक मात्रा $3x$ लीटर है (क्योंकि दूध और पानी का अनुपात 4:3 दिया गया है)।

पानी मिलाने के बाद की स्थिति: प्रश्न के अनुसार, मिश्रण में 7 लीटर पानी मिलाया गया है। इससे पानी की मात्रा $3x + 7$ लीटर हो जाती है।

नया अनुपात सेट करें: पानी मिलाने के बाद, दूध और पानी का नया अनुपात 4:5 हो जाता है। अतः, हम निम्नलिखित समीकरण बना सकते हैं:

$$\frac{4x}{3x + 7} = \frac{4}{5}$$

क्रॉस-मल्टिप्लाय करें और सरल करें: क्रॉस-मल्टिप्लाय करने पर हमें मिलता है:

$$4x \times 5 = 4 \times (3x + 7)$$

x का मान निकालें: दोनों पक्षों से $12x$ घटाएं:

$$8x = 28$$

8 से विभाजित करें:

$$x = 3.5$$

दूध की प्रारंभिक मात्रा निकालें: चूंकि दूध की प्रारंभिक मात्रा $4x$ थी, इसलिए $x = 3.5$ का मान रखने पर दूध की प्रारंभिक मात्रा होगी:

$$4x = 4 \times 3.5 = 14 \text{ लीटर}$$

सही उत्तर: मिश्रण में दूध की प्रारंभिक मात्रा 14 लीटर थी।

132. (a)

प्रत्येक अक्षर को 3 स्थान आगे बढ़ाकर 'COMPUTER' को 'FRPSXWHU' के रूप में लिखा गया है।
उसी तरीके को 'KEYBOARD' पर लागू करने पर, यह 'NHBERDUG' के रूप में लिखा जाएगा।

133. (a)

- दो वर्गों के भुजा की लंबाई क्रमशः a और b मान लेते हैं।
- वर्ग का क्षेत्रफल $\text{Area} = \text{side}^2$ से दिया जाता है।
- चूँकि दोनों वर्गों के क्षेत्रफल का अनुपात 9:16 है, हम लिख सकते हैं:

$$\frac{a^2}{b^2} = \frac{9}{16}$$

भुजा की लंबाई के अनुपात को खोजना:

- दोनों पक्षों का वर्गमूल लेकर भुजा की लंबाई का अनुपात निकालते हैं:

$$\frac{a}{b} = \sqrt{\frac{9}{16}} = \frac{3}{4}$$

- अतः, दोनों वर्गों के भुजा की लंबाई का अनुपात 3:4 है।

परिमाप के अनुपात की गणना:

- वर्ग का परिमाप $\text{Perimeter} = 4 \times \text{side length}$ से दिया जाता है।
- इसलिए, दोनों वर्गों के परिमाप का अनुपात होगा:

$$\frac{4a}{4b} = \frac{a}{b} = \frac{3}{4}$$

134. (d)

सभी पाँच घड़ियों के एक साथ बजने का अगला समय जानने के लिए, हमें उनके बजने के अंतराल का लघुत्तम समापवर्तक (LCM) ज्ञात करना होगा: 5, 10, 15, 20, और 25 मिनट।

प्राइम फैक्टराइजेशन:

$$5 = 5$$

$$10 = 2 \times 5$$

$$15 = 3 \times 5$$

$$20 = 2^2 \times 5$$

$$25 = 5^2$$

LCM की गणना: सभी प्रमुख कारकों के उच्चतम घात लें:

$$2^2 = 4$$

$$3 = 3$$

$$5^2 = 25$$

LCM:

$$4 \times 3 \times 25 = 300 \text{ मिनट}$$

चूँकि 300 मिनट 5 घंटे के बराबर है, अतः सभी घड़ियाँ 12:00 PM के 5 घंटे बाद, अर्थात् 5:00 PM पर फिर से एक साथ बजेंगी।

135. (b)

- P की कार्य दर: P अकेले कार्य को 18 दिनों में पूरा कर सकता है, तो P की कार्य दर प्रतिदिन कार्य का $\frac{1}{18}$ है।
- Q की कार्य दर: Q अकेले कार्य को 24 दिनों में पूरा कर सकता है, तो Q की कार्य दर प्रतिदिन कार्य का $\frac{1}{24}$ है।
- संयुक्त कार्य दर: P और Q की संयुक्त कार्य दर होगी:

$$\frac{1}{18} + \frac{1}{24} = \frac{4}{72} + \frac{3}{72} = \frac{7}{72}$$

अतः, वे दोनों मिलकर प्रतिदिन कार्य का $\frac{7}{72}$ भाग पूरा करते हैं।

- 6 दिनों में किया गया कार्य: 6 दिनों में, वे पूरा करते हैं:

$$6 \times \frac{7}{72} = \frac{42}{72} = \frac{7}{12}$$

यानी, उन्होंने कार्य का $\frac{7}{12}$ भाग पूरा कर लिया है।

शेष कार्य का निर्धारण करें:

- कार्य का शेष भाग होगा:

$$1 - \frac{7}{12} = \frac{5}{12}$$

शेष कार्य को पूरा करने के लिए Q द्वारा आवश्यक समय की गणना करें:

- Q की कार्य दर: Q की कार्य दर प्रतिदिन कार्य का $\frac{1}{24}$ भाग है।
- आवश्यक समय: $\frac{5}{12}$ भाग कार्य को पूरा करने के लिए, Q को समय चाहिए:

$$\frac{\frac{5}{12}}{\frac{1}{24}} = \frac{5}{12} \times 24 = 10 \text{ दिन}$$

136. (b)

आयुर्वेद दिवस 2024 का विषय "वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार" था। आयुष मंत्रालय ने 29 अक्टूबर, 2024 को 9वें आयुर्वेद दिवस का आयोजन किया। इस विषय का उद्देश्य आयुर्वेद की वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली में योगदान देने की क्षमता को रेखांकित करना था।

आयुर्वेद दिवस धन्वंतरि जयंती के अवसर पर प्रतिवर्ष मनाया जाता है, जो भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली को बढ़ावा देने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस वर्ष, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (AIIA) ने आयुर्वेद के नवाचारों को उजागर करने के लिए एक ई-पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें प्रतिभागियों को आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल में आयुर्वेद के योगदान को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया।

137. (c)

3 अक्टूबर, 2024 को यूके और मॉरीशस ने एक ऐतिहासिक समझौते की घोषणा की, जिसमें चागोस द्वीपसमूह की संप्रभुता मॉरीशस को हस्तांतरित करने का निर्णय लिया गया। इस समझौते का उद्देश्य अतीत की अन्यायपूर्ण घटनाओं को संबोधित करना और अंतरराष्ट्रीय कानूनी निर्णयों का पालन करना है। इसके तहत, डिएगो गार्सिया पर स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डा नए 99-वर्षीय लीज समझौते के तहत काम करना जारी रखेगा।

इस समझौते में विस्थापित चागोशियन समुदाय को उनके मातृभूमि में पुनर्वास का प्रावधान भी शामिल है। इसके अतिरिक्त, यूके ने मॉरीशस और चागोशियन समुदाय के लिए विकास और पुनर्वास प्रयासों का समर्थन करने के लिए आर्थिक सहायता

का वादा किया है। यह निर्णय एक पुराने औपनिवेशिक विवाद को हल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इस क्षेत्र में रणनीतिक सुरक्षा हितों को बनाए रखते हुए ऐतिहासिक गलतियों को सुधारने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

138. (c)

भारत ने 30 सितंबर, 2024 को थिम्फू, भूटान के चांगलिमिथांग स्टेडियम में फाइनल में बांग्लादेश को 2-0 से हराकर SAFF अंडर-17 चैंपियनशिप 2024 का खिताब जीता। एक गोल रहित पहले हाफ के बाद, मोहम्मद कैफ ने 58वें मिनट में हेडर के जरिए पहला गोल किया, और मोहम्मद अर्बाश ने स्टॉपेज टाइम में एक बेहतरीन बाएं पैर की स्ट्राइक के साथ जीत को सुनिश्चित किया।

139. (d)

विश्व अंतरिक्ष सप्ताह 2024, 4 अक्टूबर से 10 अक्टूबर के बीच मनाया गया। यह वार्षिक आयोजन संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित किया गया है और अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मानव विकास में योगदान को मान्यता देता है। 2024 का विषय "स्पेस एंड क्लाइमेट चेंज" था, जो जलवायु परिवर्तन को समझने और उसका समाधान खोजने में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका को उजागर करता है।

140. (c)

- **काज़िंड:** भारत और कजाकिस्तान के बीच एक संयुक्त सैन्य अभ्यास, जो आतंकवाद विरोधी अभियानों और दोनों सेनाओं के बीच पारस्परिकता को बढ़ाने पर केंद्रित है। 2024 में इसका 8वां संस्करण औली, उत्तराखंड, भारत में 30 सितंबर से 13 अक्टूबर तक आयोजित किया गया।
- **दोस्तलिक:** भारत और उज्बेकिस्तान के बीच एक द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास, जो आतंकवाद विरोधी विशेषज्ञता साझा करने और सैन्य सहयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इसका नवीनतम संस्करण फरवरी 2024 में पिथौरागढ़, उत्तराखंड में हुआ।
- **सिमबेक्स:** यह भारत और सिंगापुर की नौसेनाओं के बीच का समुद्री द्विपक्षीय अभ्यास है, जो समुद्री सहयोग और पारस्परिकता को बढ़ाने पर केंद्रित है। इसका 30वां संस्करण अक्टूबर 2024 में दक्षिण चीन सागर में आयोजित हुआ।
- **संप्रति:** यह भारत और बांग्लादेश के बीच का संयुक्त सैन्य अभ्यास है, जो आतंकवाद विरोधी अभियानों और द्विपक्षीय रक्षा संबंधों को सुदृढ़ करने पर केंद्रित है। 2024 में इसका 11वां संस्करण जशोर, बांग्लादेश में जुलाई में आयोजित किया गया।

141. (d)

नई दिल्ली में प्रगति पर चल रहे ISA असेंबली के सातवें सत्र में भारत के आशीष खन्ना को तीसरे महानिदेशक के रूप में चुना गया। निवर्तमान महानिदेशक डॉ. अजय माथुर ने अपने उत्तराधिकारी को शुभकामनाएं दीं। ISA के महानिदेशक का मुख्य कार्य सदस्य देशों को सौर ऊर्जा के वैश्विक विस्तार में समर्थन देना और समन्वित कार्यों में शामिल होकर अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के उद्देश्यों को आगे बढ़ाना है।

142. (b)

श्रीमती विजय किशोर रहाटकर को राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) की अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है। वह NCW की 9वीं अध्यक्ष होंगी। महाराष्ट्र राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल (2016-2021) के दौरान, उन्होंने "सक्षम" (तेज़ाबी हमलों के पीड़ितों के लिए सहायता), "प्रज्वला" (स्वयं सहायता समूहों को केंद्र सरकार की योजनाओं से जोड़ने) और "सहिता" (महिलाओं के लिए 24x7 हेलपलाइन सेवा) जैसे कई प्रमुख कार्यक्रमों का नेतृत्व किया।

143. (b)

2024 का अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार दारोन एसेमोग्लू, साइमन जॉनसन, और जेम्स ए. रॉबिन्सन को उनके शोध के लिए प्रदान किया गया, जिसमें उन्होंने दिखाया कि समावेशी राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियाँ दीर्घकालिक समृद्धि का नेतृत्व करती हैं, जबकि शोषणकारी प्रणालियाँ अल्पकालिक लाभ प्रदान करती हैं।

उनका अध्ययन औपनिवेशिक समय के दौरान यूरोपीय लोगों की मृत्यु दर के प्रभाव पर केंद्रित था, जिसने उपनिवेशों में संस्थानों के विकास को प्रभावित किया और उनके आर्थिक मार्गों को निर्धारित किया।

144. (b)

भारत की मेजर राधिका सेन को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में अंतर्राष्ट्रीय शांति सैनिक दिवस के अवसर पर आयोजित एक समारोह में प्रतिष्ठित 2023 संयुक्त राष्ट्र सैन्य लैंगिक अधिवक्ता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस द्वारा प्रदान किया गया, जिन्होंने मेजर सेन को एक सच्ची नेता और आदर्श के रूप में प्रशंसा की, उनकी सेवा को संयुक्त राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में मान्यता दी।

मेजर सेन इस पुरस्कार को प्राप्त करने वाली दूसरी भारतीय शांति सैनिक हैं, इससे पहले मेजर सुमन गावनी को 2019 में यह सम्मान मिला था।

145. (b)

18वीं लोकसभा में 74 महिला सांसद चुनी गईं, जो कुल 543 सीटों का लगभग 13.6% है।

17वीं लोकसभा में 78 महिला सांसद थीं, जो लगभग 14.4% के करीब थी, जिससे यह संख्या थोड़ी कम हुई है।

लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व वर्षों में धीरे-धीरे बढ़ा है। पहली लोकसभा (1952-1957) में महिला सांसदों का प्रतिशत लगभग 5% था। यह संख्या समय के साथ बढ़ती गई, 17वीं लोकसभा में 14% तक पहुंची और 18वीं लोकसभा में यह 13.6% तक पहुंची।

भारत में महिला प्रतिनिधित्व के लिए यह एक प्रगति है, लेकिन यह अभी भी कई अन्य देशों की तुलना में कम है, जैसे कि दक्षिण अफ्रीका में 46%, यूनाइटेड किंगडम में 35% और अमेरिका में 29%।

146. (c)

कतर ने हाल ही में बंगाल की खाड़ी में बने चक्रवात का नाम 'Dana' दिया है। अरबी में 'Dana' का अर्थ "उदारता" होता है।

गंभीर चक्रवात 'Dana' ने 24 अक्टूबर की रात को ओडिशा के तट पर लैंडफॉल किया, जिसकी गति 100 से 110 किमी प्रति घंटा थी, और इसके झोंके 120 किमी प्रति घंटा तक पहुंचे।

उष्णकटिबंधीय चक्रवात वो चक्रवात होते हैं जो मकर रेखा और कर्क रेखा के बीच के क्षेत्रों में विकसित होते हैं। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ऐसे मौसम प्रणालियों को "उष्णकटिबंधीय चक्रवात" कहता है, जिनकी गति 'गेल फोर्स' (न्यूनतम 63 किमी प्रति घंटा) से अधिक होती है।

दुनिया भर में छह क्षेत्रीय विशेष मौसम केंद्र (RSMCs) और पाँच क्षेत्रीय उष्णकटिबंधीय चक्रवात चेतावनी केंद्र (TCWCs) हैं जो उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के लिए सलाह जारी करने और नामकरण के लिए अधिकृत हैं। इन केंद्रों में से प्रत्येक विभिन्न महासागरों में बनने वाले चक्रवातों का प्रबंधन करते हैं।

पाँच क्षेत्रीय उष्णकटिबंधीय चक्रवात चेतावनी केंद्र (TCWCs):

1. ESCAP/WMO टायफून समिति
2. WMO/ESCAP उष्णकटिबंधीय चक्रवात पैनल (जो हिंद महासागर में चक्रवातों का नामकरण करता है)
3. RA I उष्णकटिबंधीय चक्रवात समिति
4. RA IV हरिकेन समिति
5. RA V उष्णकटिबंधीय चक्रवात समिति

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) उन छह RSMCs में से एक है जो WMO और ESCAP के तहत उष्णकटिबंधीय चक्रवात और तूफान की चेतावनियाँ जारी करता है।

WMO/ESCAP एक अंतर-सरकारी निकाय है जिसकी स्थापना 1972 में विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) और संयुक्त राष्ट्र के एशिया-प्रशांत आर्थिक और सामाजिक आयोग (ESCAP) द्वारा की गई थी।

147. (b)

कार्लोस अल्कराज ने अलेक्जेंडर ज्वेरेव को फाइनल में 6-3, 2-6, 5-7, 6-1, 6-2 से हराकर 2024 फ्रेंच ओपन पुरुष एकल का खिताब जीता। यह उनका पहला फ्रेंच ओपन और तीसरा प्रमुख खिताब था।

21 साल की उम्र में, अल्कराज तीन अलग-अलग सतहों पर प्रमुख खिताब जीतने वाले सबसे कम उम्र के पुरुष खिलाड़ी बन गए, जिन्होंने 2022 में यूएस ओपन (हार्ड कोर्ट) और 2023 में विंबलडन चैंपियनशिप (घास) पर खिताब जीते थे।

ज्वेरेव 1996 में माइकल स्टिच के बाद फाइनल में पहुंचने वाले पहले जर्मन खिलाड़ी बने। नोवाक जोकोविच, जो पिछली बार के चैंपियन थे, क्वार्टरफाइनल में घुटने की चोट के कारण हट गए।

148. (b)

ब्रिक्स गेम्स 2024 का आयोजन दक्षिण अफ्रीका में नहीं बल्कि रूस के कज़ान में हुआ था, इसलिए कथन 1 गलत है। भारत ने कुल 29 पदक जीते, जिनमें 3 स्वर्ण, 6 रजत और 20 कांस्य पदक शामिल थे, इसलिए कथन 2 सही है।

अतिरिक्त जानकारी:

- रूस ने 343 पदकों (173 स्वर्ण, 101 रजत, और 69 कांस्य) के साथ पदक तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया।
- बेलारूस ने 32 स्वर्ण, 56 रजत और 68 कांस्य पदक जीते, जबकि चीन ने 17 स्वर्ण, 17 रजत और 12 कांस्य पदक हासिल किए।

149. (a)

नेपाल सरकार ने निर्दिष्ट सार्वजनिक अस्पतालों में 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए निःशुल्क कैंसर उपचार प्रदान करने की घोषणा की है। यह पहल 16 नवंबर से प्रभावी है और इसका उद्देश्य माता-पिता पर वित्तीय बोझ को कम करना है। उपचार कांति चिल्ड्रन हॉस्पिटल, भक्तपुर कैंसर हॉस्पिटल, और बीपी कोइराला मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल में प्राप्त किया जा सकता है। यदि सरकारी निधि अपर्याप्त होती है, तो मंत्रालय आंतरिक स्रोतों से अतिरिक्त वित्तीय व्यवस्था करेगा। 2022 में, नेपाल में 22,000 नए कैंसर मरीज दर्ज किए गए, जिसमें कैंसर से 11% मौतें हुईं, और लगभग 1,500 बच्चों को हर साल कैंसर का निदान होता है।

150. (c)

31 अक्टूबर, 2024 को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अरुणाचल प्रदेश के तवांग में मेजर रालेंगनाओ बॉब खाथिंग को समर्पित "वीरता संग्रहालय" का उद्घाटन किया और सरदार वल्लभभाई पटेल की एक प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह और अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू भी मौजूद थे। मेजर खाथिंग को 1951 में तवांग में भारतीय प्रशासन की स्थापना के लिए किए गए अभियान के नेतृत्व के लिए सम्मानित किया गया। सरदार पटेल की रियासतों के एकीकरण में भूमिका को भी इस कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। रक्षा मंत्री की यह यात्रा भारत-चीन सीमा पर भारतीय सैनिकों के साथ दिवाली मनाने के साथ-साथ भारत की सीमाओं को सुरक्षित करने के संकल्प को भी प्रदर्शित करती है।

